शाश्वत धर्म

अप्रेल १९९२

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

संपादक - जे. के. संघवी

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी,
* श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भैंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ : नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, * श्री विमलनाथ जैन डोसी दहेरासर - थराद. • श्री सौधर्मवृहत्पागच्छ जैन संघ-आणंद • श्री सौधर्मवृहत्पागच्छ जैन संघ-जावरा

शाश्वत धर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

प्रधान संपादक : जे. के. संघवी

सहसंपादक : शांतिलाल सुराना

सदस्यता शुल्क
बीस वर्षीय-पांचसौ रुपये
दस वर्षीय-तीन सौ रुपये
तीन वर्षीय- एक सौ रुपये

विज्ञापन शुल्क (एक बार)
पूरा पृष्ठ - पांच सौ रुपये
आधा पृष्ठ - तीन सौ रुपये
पाव पृष्ठ - दो सौ रुपये
अंतिम कवर पृष्ठ - एक हजार रुपये
कवर पृष्ठ २ या ३ - सात सौ रुपये

सम्पर्क सूत्र

कार्यालय ✆ ५३४ ०७ २४ निवास ✆ ५३४ ८० ७३

शाश्वत धर्म कार्यालय

डेवलपमेन्ट बैंक के पास जामली नाका-थाने-४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

वर्ष : ३९ ✧ अंक ११ ✧ अप्रेल १९९२

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित
अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

शाश्वत धर्म अप्रेल १९९२

कहा? क्या?

सम्पादकीय .... जे. के. संघवी ३
(प्रासंगिक लेख) नवाणुयात्रा सिद्धाचल की .. पू. आ. श्रीमद् जयंतसेनसूरिजी ५
(आवरण पृष्ठ चित्र कथा) भगवान महावीर ....
.... और चन्दनबाला .... स्व. आचार्य श्री विद्याचंद्रसूरिजी ९
भगवान महावीर पर हुए अट्ठारह उपसर्ग .... श्री नैनमल विनयचंद्र सुराणा ११
चरम तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर का ....
.... जीवन दर्शन – विहंगावलोकन ..... श्री सुगनचंद जैन १७
ज्ञान कसौटी (१३) .... श्री महेन्द्र जे. संघवी १९
(धारावाहिक) श्री विमलनाथ जिनस्तवन (१३) ....
पू. मुनिराज श्री जयानंद विजयजी २१
श्रमण भगवान महावीर का अनेकान्त–दर्शन ..... उपाध्याय श्री अमरमुनिजी २३
(स्वास्थ्य चर्चा) उबला हुआ पानी पीजिए .... डॉ. श्री जे. सी. बैद २७
(गजल) महावीर चरणों में .... श्री छन्दराज पारदर्शी २८
शब्दसागर इनामी स्पर्धा (९) .... श्री प्रदीप एम. जैन. २९
ऋजुवालिका के तट पर .... धर्मपाल श्री महेन्द्र जैन ३२
सरे राह चलते–चलते .... संकलित ३३
क्या आप जानते हैं कि .... धर्ममित्र ३५
समाचार दर्शन ३७
परिषद् के प्रांगण से ३९
समाचार – सार ४०
शोक श्रद्धांजली ४५
नवप्रकाशित साहित्य ४९
चित्रदर्शन ५३

गुजराती विभाग

समत्व साधनानो राजपथ .... मुनि श्री अमरेन्द्र विजयजी ५७
शुं फरक पड़े .... श्री सेवंती म. संघवी ६१
परस्पर घर्षण अने घृणा नो शुकोई विकल्पनथी .... मुनि श्री भुवनचंद्रजी ६२
माणस मात्र भूल ने पात्र .... श्री लघुगोविन्द ६३

लेखकों के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

श्रमण भगवान महावीर जन्म कल्याणक
एकता की ओर पहला कदम

श्रमण भगवान महावीर का जीवन, उनके आदर्श व उपदेश आज भी अजोड़ है व भय से त्रस्त वर्तमान परिस्थितियों में विश्व के लिये परम उपयोगी है। अहिंसा सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह के मूल सिद्धान्तों में संसार की तमाम समस्याओं का निराकरण छुपा हुआ है। ऐसे महान उपकारी चरम तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला १३ को आता है, जिस दिन हम उनके गुणों को याद करते हुए नतमस्तक होकर श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं एवं उनके उपदेशों का प्रचार/प्रसार करते हैं।

धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में जैन समाज का विश्व में विशिष्ट स्थान रहा है। सिद्धान्तों के परिपालन एवं उच्च आदर्शों के आचरण ने हमें गौरव दिलाया है। किन्तु जैसे–जैसे हम सम्प्रदायवाद के दल–दल में फँसते गये, अलग–अलग फिरकों में बँटते गये, हमारी छबि धूमिल होती जा रही है। श्रमणाचार व श्रावकाचार में शिथिलाचार का आगमन होने से हम अपने कर्तव्यों, आदर्शों, संस्कार, एवं नीतियों के प्रति उदासीन व विमुख होते जा रहे हैं। वर्तमान स्थिति भयजनक बिन्दु तक पहुंच गयी है। हमारे खान–पान के आदर्शों को भी धक्का लगा है। संगठनात्मक प्रचार न होने की वजह से ठोस परिणाम सामने नहीं आते।

विश्व के किसी भी धर्म, समाज या संस्था की अपेक्षा जैनों के पास विशेष उदारमना, सेवाभावी, श्रेष्ठ आचरणवाले एवं तन–मन–धन से समर्पित कार्यकर्ता है। वर्तमानकाल में उंचे आदर्शों को जीवन में उतारकर अपने जीवन के सारे क्षण जैन शासन के नाम देनेवाले पूज्य साधू–सन्त हैं। किन्तु सम्प्रदायवाद के कारण एक होकर कार्य न करने से जितने सुन्दर परिणाम आने चाहिये, नहीं आ पाते हैं।

हमारे आराध्य देव एक हैं, हमारी मंझिल हैं, हमारे सिद्धान्त एक हैं, हमारी भावनायें एक हैं। जिस प्रकार एक चौराहे से रेल्वे स्टेशन की ओर जाना हो तो जाने के साधन अलग–अलग हो सकते हैं। कोई पैदल, सायकिल, तांगे, कार, बस या अन्य किसी साधन से भी जा सकते है किन्तु यदि कोई तर्क करे कि पैदल ही जा सकते हैं, सायकिल या अन्य वाहन से नहीं अथवा तांगे या सायकिल द्वारा ही जा सकते है बस, कार द्वारा या पैदल नहीं, तो इस प्रकार की उलझन में पड़ना व्यर्थ है। अलग–अलग साधनों से पहुंचने में समय कम–ज्यादा लग सकता है किन्तु यदि मार्ग

सही है तो निश्चित वह व्यक्ति गतव्य स्थान तक पहुंच सकता है। उसी प्रकार हमारी मंझिल, हमारा मार्ग एक है, क्रियाओं में अंतर हो सकता है। क्रियाऐं साधन है, साध्य नहीं। साध्य को प्राप्त करने के लिये साधन का उपयोग किया जाता है। आज हमारे अलग–अलग सम्प्रदायों में इन्ही क्रियाओं के भेद है। किन्तु हमारे आराध्यदेव, मूलसिद्धान्त व लक्ष्य एक है, अतः क्रिया कलापों को अपने–अपने विवेक पर छोड़ते हुएं, उसमें न उलझते हुए मूल सिद्धान्तों के प्रचार/प्रसार के साथ एक लक्ष्य की ओर आगे बढें तो सम्प्रदायवाद की समस्या का सुगमता से हल हो सकता है। यूं भी आज कोई सम्पूर्ण ज्ञानी नहीं है जो शत प्रतिशत सत्य को प्रकाशित कर सके। आज सिद्धान्तों की व्याख्या श्रुत और मति के आधार पर की जा रही है। अपने विवेक के आधार पर जो क्रियायें हमे योग्य लगे उस पर आचरण करें, लेकिन व्यर्थ में क्रियाओं को लेकर एक दूसरे पर दोषारोपण करते हुए आपस में उलझे नहीं।

भावनात्मक एकता का पहला कदम बढाएं, श्रमण भगवान महावीर के जन्म कल्याणक उत्सव को हम एक मंच पर एक साथ मिलकर मनाएं। निश्चित रूप से इससे हमारी दूरियॉं कम होंगी। चारों सम्प्रदाय द्वारा एक साथ मनाने से परिणाम भी सुंदर आयेंगे। इस शुभ प्रणाली की शुरूआत कई नगरों में हो चुकी है, आप भी अपने यहॉं सभी सम्प्रदाय के भाईयों के साथ मिलकर भगवान महावीर का जन्म कल्याणक दिवस मनायें, यदि इस बार अपने यहॉं ऐसा न हुआ हो तो अभी से प्रयत्न प्रारंभ कर देवें। शुभभाव से किये जानेवाले कार्य के परिणाम हमेशा सुंदर आते हैं यदि हम नेक प्रयत्न करेंगे तो इसमें अवश्य ही सफलता मिलेगी।

J. K. Sanghvi
(जे. के. संघवी)

महावीर के चरणों में

महावीर के चरणों में मेरा नमस्कार हो –
वे चरण जिन्होंने भारत में पदयात्राऐं की थी
जन जन के उद्धार की जिन्होंने देशना दी थी
जनता को आगम ज्ञान से मोक्ष की राह बताई थी।–१

जन जीवन के प्रति दयालुता, हृदय में धारी थी
सुआचरण ही धर्म है, ये जीवन की राह कही थी
मनुज में अन्तर्मात्मा है, ज्ञानवान ज्योतिवान है
अपना उद्धार स्वयं करो, स्वाधीनता में सन्मान है।–२

– सौभाग्यमल जैन वकील – रतलाम

प्रासंगिक लेख

नवाणु यात्रा सिद्धाचल की

— श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरिजी

[प. पू. आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी की निश्रा में थराद निवासी अदाणी कुंवरजीभाई देवराजभाई परिवार की ओर से सिद्धाचलजी तीर्थ पर नवाणु यात्रा करवायी जा रही है। २० फरवरी १९९२ से प्रारंभ इस यात्रा में ६०० आराधक जुड़े हुए है। तीर्थमालारोपण विधि २३ अप्रेल १९९२ को होने जा रही है, इस अवसर पर यह प्रासंगिक लेख प्रकाशित किया जा रहा है — सम्पादक]

भारतीय संस्कृति में तीर्थयात्रा को महत्त्व पूर्ण स्थान प्राप्त है। तीर्थयात्रा से मनुष्य को अनेक अनुभव प्राप्त होते हैं। परमात्म दर्शन और सत्संग के कारण उसका जीवन पवित्र बन जाता है। तीर्थयात्रा से जन्म—जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं और यात्री को अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है। प्राकृतिक वातावरण में मन प्रसन्न हो जाता है।

'यात्रा' में दो अक्षर हैं — 'या' और 'त्रा'। 'या' का अर्थ है — 'जो' और 'त्रा' का अर्थ है — 'रक्षा करना'। यात्रा संस्कृत शब्द है। इसका अर्थ है — जो क्रिया आत्मा की रक्षा करती है; वह सही अर्थ में यात्रा है। गन्तव्य तक सुरक्षित पहुँचाये; वह यात्रा है।

तीर्थक्षेत्र दो प्रकार के होते हैं — १) सिद्धक्षेत्र और २) अतिशय क्षेत्र। जिस स्थान पर एक या एक से अधिक जीव कर्मक्षय कर के मोक्ष प्राप्त करते हैं, उसे सिद्धक्षेत्र कहते हैं। इसी प्रकार जिस स्थान पर कोई प्रभावक घटना घटित होती है; उसे अतिशय क्षेत्र कहते हैं।

सिद्धक्षेत्र से जो जीव मोक्ष प्राप्त करते हैं; वे संसारी जीवों के लिए प्रेरणा केन्द्र होते हैं। इसलिए सिद्धक्षेत्र की यात्रा करनेवाले यात्रियों को वहाँ पर अहिंसा, संयम और तप के द्वारा मोक्ष प्राप्त करने की प्रेरणा मिलती है।

महातीर्थ शत्रुंजय या सिद्धाचल ऐसा ही एक महान सिद्धक्षेत्र है। यह शाश्वत तीर्थ होने से यहाँ से अनन्तानन्त जीवों ने मोक्ष प्राप्त किया है। इस तीर्थ का कण—कण पवित्र है। इसीलिए कहा गया है कि —

एकेकुं डगलु भरे, शत्रुंजय स्हामो जेह।
ऋषभ कहे भव क्रोड़ ना, कर्म खपावे तेह॥

एक सौ आठ नाम अलंकरणों से विभूषित, सोरठ देश की सवाई दौलत और गरवी गुजरात का गौरव महातीर्थ शत्रुंजय सब तीर्थों का मुकुटमणी है। कहते हैं, अभवि जीव तो अपनी आँखों से इसे कभी नहीं निहारता; पर जो भी पशु पक्षी या तिर्यंच जीव इस महातीर्थ की स्पर्शना करते हैं; वे भी सद्गति प्राप्त कर तीसरे भव में मुक्ति रमा का वरण करते हैं। फिर मनुष्य की तो बात ही क्या है? इस मोक्षमहल के भाग का अवलंब ले

कर वह सहज ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है। सिद्धराजजी ढड्ढा अपने पूर्व जन्म में तीर्यंच (तोता) थे। उस पर्याय में रहते हुए उनकी आत्मा ने इस महातीर्थ के मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान की सेवा–पूजा की और भक्ति आराधना की। इसी के फलस्वरूप उन्हें मनुष्य पर्याय प्राप्त हुई।

इस परम पावन तीर्थ पर चैत्र सुदि पूनम के दिन श्री पुंडरिक गणधर, फागण सुदि दशमी के दिन विद्याधर नमि और विनमि, फाल्गुन सुदि तेरस के दिन कृष्ण पुत्र सांब और पद्युम्न, कार्तिक सुदि पूनम के दिन द्रविड और वारिखिल्ल तथा आसो सुदि पूनम के दिन पाँच पांडव सिद्धगति को प्राप्त हुए। इनके साथ करोड़ो साधु–मुनिराजों ने भी सिद्ध पद प्राप्त किया।

यह महातीर्थ आराधक के गले का ताईत है। जैसे पर्वतों में मेरूपर्वत, राजाओं में श्री राम, मंत्रों में नवकार, तारों में चाँद, पक्षियों में हंस, कुलों में इक्ष्वाकु वंश, क्षमावंत में श्री अरिहंत और तपशूरों में मुनि महान हैं; वैसे ही महातीर्थ शत्रुंजय सब तीर्थों में महान है।

अन्य तीर्थों में ब्रह्मचर्य पालन पूर्वक उग्रतप करने से जो फल प्राप्त होता है; वह फल शत्रुंजय तीर्थ पर मात्र निवास करने से (अत्यल्प प्रयत्न से) प्राप्त होता हैं। इसी प्रकार अन्य तीर्थों पर एक करोड लोगों को इच्छा भोजन देने से जो फल प्राप्त होता हैं; वह फल इस महातीर्थ पर मात्र एक उपवास करने से प्राप्त होता है।

इस महातीर्थ को वन्दन करने से तीन लोक के समस्त नाम तीर्थों की यात्रा का फल प्राप्त होता है। शत्रुंजय की ओर जाने वाले यात्री संघ की भक्ति करने से और साधु–मुनिराजों को पडिलाभने से महान फल प्राप्त होता है। अन्यत्र वैसी भक्ति करने से जो सामान्य फल प्राप्त होता हैं; उससे करोड़ गुना फल शत्रुंजय की परोक्ष भक्ति से प्राप्त होता है और शत्रुंजय दर्शन के पश्चात् भक्ति करने से अनन्त गुना फल प्राप्त होता है।

इस महातीर्थ पर मात्र पूजा और न्हवण से जो पुण्यलाभ होता है; वह अन्य तीर्थों पर भूमिदान, सुवर्णदान अथवा/और आभूषणों का दान करने से भी नही होता। कहने का आशय यह है कि इस महातीर्थ पर अल्प प्रयत्न से जितना लाभ होता है; उतना लाभ अन्य तीर्थों पर प्रयत्नों की बहुलता से भी नहीं होता।

इस महातीर्थ पुंडरीक गिरि का स्मरण करते हुए नवकारसी, पोरिसी, पुरिमड्ढ, एकासणा, आयंबिल या उपवास करने से उसे अनुक्रम से दो उपवास, तीन उपवास, चार उपवास, पाँच उपवास, पन्द्रह उपवास या मासखमण के तप का फल प्राप्त होता है।

जो आराधक चौविहार छट्ठ पूर्वक इस तीर्थ की सात बार यात्रा करता है, वह तीसरे भव में मोक्ष प्राप्त करता है। भगवान ऋषभदेव की निर्वाणभूमि अष्टापद, बीस तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि संमेतशिखर, श्री वर्द्धमान स्वामी की निर्वाण भूमि पावापुरी, श्रीवासुपूज्य भगवान की निर्वाणभूमि चंपापुरी और श्री नेमिनाथ भगवान की नर्वाणभूमि श्री गिरनार तीर्थ इन सब तीर्थों को वन्दन करने से जो फल प्राप्त होता है; उससे सौ गुना अधिक फल इस पुंडरिक गिरि को वन्दन करने से होता है।

इसीलिए गुरूदेवं श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी महाराज लिखते हैं –

श्री सिद्धाचल तीर्थ ने वन्दो, शिव संपति नो एह छे कन्दो, मेटं दुरगति फन्दो।
टुंक नवाणु ए गिरि सोहे, नाम सुणन्ता पातिक खोहे, देखंता दिल मोहे।।

भाव करीने ए गिरि भेटे, पूरव संचित कर्म ने मेटे, पामे नहीं गति हेठे।
सर्व तीर्थ में मोटो ए जाणो, संदेह दिलमां कोई नवि आणो, मिले नाणो नवि टाणो।।

सूत्रमांहे ए तीरथ भाख्यो, सूरिराजेन्द्रे सांचो दाख्यो मुनिजन मन में राख्यो।
कांकरे कांकरे सिद्ध अनन्ता, सूत्रमांहि कहे नाणी महन्ता, सूरि राजेन्द्र महन्ता।।

यह महातीर्थ शाश्वत अर्थात् सदाकाल से है। किसी काल में नहीं था; ऐसा नहीं है। जैसे यह सदाकाल से है, वैसे ही यह अनन्तकाल तक रहेगा भी। काल विशेष में इसका आकार छोटा–बड़ा हो सकता है; पर इसका अस्तित्व सदा बना रहता है।

पहले आरे में शत्रुंजय का परिमाण इक्यासी योजन का, दूसरे आरे में सत्तर योजन का, तीसरे आरे में साठ योजन का और चौथे आरे में पचास योजन का था। वर्तमान पॉचवे आरे में इसका परिमाण बारह योजन का है और छठे आरे में इसका परिमाण सिर्फ सात हाथ का रहेगा। इसका शाश्वत भाव अक्षय है।

यात्रा दो प्रकार से होती है – १) सवारी द्वारा और २) पैदल। किसी भी वाहन में बैठकर यात्रा करने की अपेक्षा पैदल यात्रा करना अधिक लाभदायक है। यह पैदल यात्रा भी यदि संयम पूर्वक छह 'री' का पालन करते हुए की जाये, तो बहुत अधिक लाभ प्राप्त होता है। छह 'रि' इस प्रकार हैं – १) भूमि संथारी – आराधक यात्री को भूमि पर संथारा करना चाहिये। २) ब्रह्मचारी–ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये। ३) सचित्त परिहारी – सचित्त (लीलोत्तरी आदि) खान पान का त्याग करना चाहिये। ४) एकल आहारी – दिन में केवल एक बार ही आहार ग्रहण करना चाहिये। ५) गुरु पदानुसारी – गुरू महाराज का अनुगमन करते हुए पैदल यात्रा करनी चाहिये। ६) प्रतिक्रमणकारी सुबह और शाम दोनों समय प्रतिक्रमण करना चाहिये।

यात्रा के अन्य दो प्रकार और हैं – १) द्रव्य यात्रा और २) भाव यात्रा। बिना भाव के केवल सैरसपाटे के लिए किसी क्षेत्र पर जाना और इन्द्रिय विषयों का पोषण करना, रेडियो ट्रान्झिस्टर साथ ले जाना और गीत संगीत का रस ले–ले कर श्रवण करना, ताश, पत्ते या चौसर, कॅरम आदि खेलों में समय बिताना और मनोरंजन से तृप्त होकर घर लौटना द्रव्य यात्रा है। ऐसी यात्रा से किसी प्रकार का आध्यात्मिक लाभ नहीं होता; अपितु कर्मबंध अधिक होने के कारण हानि ही अधिक होती है।

अतः कोई भी यात्रा भाव पूर्वक ही होनी चाहिये। कहा भी है – 'यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी'। अर्थात् भावना के अनुसार फल प्राप्त होता है। अतः भाव यात्रा करनेवालों को तीर्थक्षेत्र में सदा अप्रमत्त रहना चाहिये और कर्मबन्ध के कारणों से सदा दूर रहना चाहिये। वहाँ अपना हर काम जयणापूर्वक करना चाहिये।

इस संसार सागर में यह तीर्थ मजबूत प्रवहण के समान है। इसके आधार से कोई

भी जीव निश्चितरूप से पार हो जाता है और जन्म मरण के चक्कर से छूट जाता है। यह महातीर्थ भवि लोगों को विमल बनाता है, इसलिए इसे विमलाचल भी कहते हैं। यह तीर्थ मोक्षवृक्ष का फल प्राप्त करने के लिए मानो धर्म का हाथ है। यहाँ की आसमान से बातें करनेवाली मंदिरावली की उज्ज्वलता लखकर ऐसा लगता है, मानो हिमगिरि के भ्रम से आकाशगंगा ही यहाँ अवतीर्ण हो गयी है। ऐसे गिरिराज की जो वन्दना करता है, उसका जन्म सफल हो जाता है, उसे यह संपदा और विजय संपदा प्राप्त होती है और वह आराधक चिर आनंद को प्राप्त करता है।

प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान इस तीर्थ पर निन्यानबे पूर्व बार पधारे। चौरासी लाख को चौरासी लाख से गुणाकार करने पर जो संख्या प्राप्त होती है; उसे एक पूर्व कहते हैं। ऐसे निन्यानबे पूर्व बार श्री ऋषभदेव भगवान इस तीर्थ पर पधारे। इस घटना की स्मृति में वर्तमान में सिद्धाचल की नवाणु यात्रा की जाती है।

यह नवाणु यात्रा तप और जप पूर्वक की जाती है। तप का ताप और जप की ज्योति दोनों आराधक के जीवन को जाज्वल्यमान कर देते हैं। यह यात्रा मानसिक निर्मलता, शारीरिक स्वस्थता और वाचिक विशुद्धता में सहायक होती है। आत्मा के निर्मलीकरण की और भवाभिनन्दिता तथा पुद्गलाभिनंदिता के प्रति उदासीनता की यह एक अनुपम प्रक्रिया है। इसके कारण जीवन अनुशासन बद्ध और नियमित होता है तथा परिणाम विशुद्धि में गतिशीलता आती है।

यह यात्रा जीवन की अलौकिक पावन प्रवृत्ति है। इससे मनुष्य श्रेष्ठता की मंजिल की ओर अग्रसर होता जाता है। पारिवारिक, व्यापारिक और सांसारिक बन्धनों से मुक्ति का अहसास करने के लिए यह यात्रा एक अद्भुत साधन है। इस यात्रा में अप्रमत्त भाव से धर्म प्रवृत्ति में लीन रहनेवाला साधक अपने निजी जीवन में विशेष अनुभूति प्राप्त करता है।

नवाणु यात्रा के लिए बाहरी तैयारी के साथ आन्तरिक तैयारी होना अत्यन्त आवश्यक है। आन्तरिक तैयारी आत्मबल बढाती है और बाहरी तैयारी मन, वचन और काया को बल प्रदान करती है। इसीलिए शत्रुंजय महातीर्थ की नवाणु यात्रा का क्रम अविच्छिन्न रूप से चलता रहा है।

नवाणु यात्रा से अनेक प्रकार के व्यसनों से छुटकारा मिलता है। जो विधिपूर्वक नवाणु यात्रा करता है, वह क्लिष्ट कर्मों को नष्ट करने में सफलता प्राप्त करता है। यह महातीर्थ सिद्धाचल आत्मसिद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है। अनन्तानन्त आत्माओं ने यहाँ से सिद्ध पद प्राप्त किया और अनन्त जीव भविष्य में भी यहाँ से सिद्धपद प्राप्त करेंगे; इसलिए इसका सिद्धाचल नाम सार्थक है। इससे सबको सीधी राह चलने की प्रेरणा प्राप्त होती है। यह तीर्थ जीवों को कर्मशत्रुओं से विजय प्राप्त करवाता है; अतः इसका दूसरा नाम शत्रुंजय भी है। इसके दर्शन से दुर्गति टल जाती है।

यही कारण है कि वर्तमान में भी कई आराधक इस सिद्धक्षेत्र में आकर नवाणु यात्रा करने की भावना रखते हैं।

भगवान महावीर और चन्दनबाला

रचयिता – स्व. आचार्य श्री विद्याचंद्रसूरीश्वरजी

चम्पानगरी – नृप दधिवाहन, दयाधर्म पालक गुणवान।
थी रानी धारिणी नाम की, जिसमें था लावण्य महान॥
पुत्री थी वसुमती सुशीला, विनय विवेक गुणों की खान
'भूप शतानिक' ने सहसा ही पहुंचाई निज सैन्य महान॥

चम्पापुर को शत्रु सैन्य ने घेर लिया सहसा अविलम्ब।
दधिवाहन के सेनापति को मिला नहीं कोई अवलम्ब॥
युद्ध हुआ हारा दधिवाहन, ध्वस्त हुई नगरी तत्काल।
माता पुत्री भाग रही थी, अरिभट ने रोका बन काल॥

रथ में बिठा उन्हें ले भागा, रानी को निज पत्नी मान।
शील बचाने सोच रही थी, रानी, छोडूं अपने प्राण॥
दाँतों से निज जिह्वा काटी, छूट गये रानी के प्राण।
राजसुता लख दृश्य भयावह, चिल्लाई कर रुदन महान॥

सैनिक बोला – अरे! अरे! तू क्यों होती है भयभीत?
जो होना था हुआ देववश, मुझसे अब तू रह निश्चिन्त।
कौशाम्बी के चौहट आया राजसुता को ले वह नीच।
मूल्य लगाया वेश्या ने तो बोली वह मुझको मत खींच॥

शासनदेवी ने आकर वेश्या के काटे नाक व कान।
वेश्या चिल्ला कर भागी चन्दनबाला को डायन जान।
सेठ धनावह मूल्य चुका, ले आया उसको अपने साथ।
राजसुता को देख सेठ की पत्नी जलती थी दिन रात।

सेठ धनावह ने फिर उसका, चन्दनबाला रक्खा नाम।
बेटी कह कर उसे बुलाता, करती वह घर का सब काम।
धोती पाँव धनावह के तब गिरती वेणी को तत्काल।
लिये हाथ में पति को देखा, पत्नी मूला बनी कराल।

मूला ने सोचा – निश्चय ही, पति का है इस पर अनुराग।
मैं वृद्धा हूँ यह युवती है, कर देगा यह मेरा त्याग।
ईर्ष्यावश – मूला – मन ही मन, बड़बड़ करती थी दिन रात।
पर–स्त्री लाया पति, विजाती की, कहूँ किसे मैं मन की बात।

सेठ गया व्यापार हेतु, मूला को कह बाहर परदेश।
चन्दनबाला के पाँवों में, बेड़ी डाली, काटे केश।
चली गई मूला पीहर में किये बन्द घर के सब द्वार
भूखी प्यासी चन्दनबाला, जपती मन्त्र महा नवकार।

इधर धनावह सेठ आ गया, देखे द्वार सभी है बन्द।
मूला के भय से ही सबने छोड़ रखा सारा सम्बन्ध।
नहीं बोलते कोई कुछ भी, अतः सेठ ने तोड़े द्वार।
चंदनबाला को देखा तो, हुआ सेठ को दुःख अपार।

उड़द – बाकुले चन्दन को दे, सेठ गया लेने लोहार।
पाँव एक रख बाहर अपना, चन्दनबाला बैठी द्वार।
आवे कोई अतिथि, उड़द का लेवे मुझसे यह आहार।
यही भावना भाती थी वह दोपहरी में बारम्बार।

महा तपस्वी आते देखे, बोली करिये पावन द्वार।
किंतु तपस्वी लौट गये तो, रोने लगी बहा कर धार।
लौट गये जो अतिथि, पापिनी मैं हूँ किस भव का यह पाप।
लिया नहीं आहार अतिथि ने, धिक् धिक् जीवन धिक् अभिशाप।

रोती देखी चन्दन को यों, लौट पुनः प्रभु आये द्वार।
शेष पाँच दिन थे जब तप में लिया उड़द का वह आहार।
पञ्च दिव्य प्रकटे, प्रभुवर ने किया पारणा लेकर दान।
हुई सुन्दरी चंदनबाला रूपवती सौंदर्य निधान।

बनी बेड़ियाँ नूपुर मनहर वेणी का सुन्दर सन्धान।
हुआ सेठ को द्रव्य देख कर मन–ही मन आश्चर्य महान।
कौशाम्बी – नृप बोले आकर, इस धन पर मेरा अधिकार।
हुई देववाणी, इस धन पर चन्दनबाला का अधिकार।

–★–★–★–★–

भगवान महावीर पर हुए अठारह उपसर्ग

– श्री नैनमल विनयचन्द्र सुराणा

दीक्षित होने के पश्चात् गोशीर्ष चन्दन आदि से विलेपित देह की सुगन्ध के कारण भौंरे उनकी देह पर डंक मारते रहे, उनके अद्भुत सौन्दर्य एवं सुगन्धित देह को देखकर आकर्षित हुई स्त्रियाँ उनसे काम–भोग की याचना करती रहीं, फिर भी भगवान मेरु पर्वत की तरह अडोल रह कर उन उपसर्गों को समभाव से सहन करते हुए धरातल पर विचर रहे थे।

पहला उपसर्ग –

एक बार महावीर कुमार–ग्राम के वन में रात्रि के समय ध्यानस्थ रहे थे। उस समय किसी ग्वाले ने अपने बैल वहाँ खड़े कर दिये। जब वह घर पर गायें दोह कर लौटा तो उसने वहाँ अपने बैल नहीं देखे। उसने पूछा – ''हे देवार्य! मेरे बैल कहाँ हैं?''

ध्यानस्थ प्रभु से उत्तर नहीं मिलने पर वह जंगल में बैलों को ढूँढ़ता रहा। जब लौटा तो बैल स्वतः ही चारा चर कर लौट आये थे। तब उस ग्वाले ने विचार किया, ''अरे! जानते हुए भी इसने मुझे बैलों के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं बताया और मुझे रात भर जंगल में भटकाया।''

यह सोचकर वह ध्यानस्थ भगवान पर प्रहार करने के लिए उतारू हो गया। शकेन्द्र ने आकर उस ग्वाले को दण्ड दिया। शकेन्द्र ने भगवान को कहा कि बारह वर्षों तक आप पर अनेक उपसर्ग होंगे। अतः यदि आप आज्ञा दें तो मैं आपके पास रहूँ? भगवान ने इन्कार किया, फिर भी शकेन्द्र ने उपसर्ग–निवारणार्थ सिद्धार्थ व्यन्तर को भगवान की सेवा में नियुक्त किया।

दूसरा उपसर्ग –

मोराक सन्निवेश में दुइज्जन्त तापस के आश्रम में चातुर्मास की विनती स्वीकार करके जब वे वहाँ चातुर्मास हेतु आये तब वहाँ कुलपति द्वारा प्रदत्त स्थान में निर्मित तृण–कुटीर में रहे। वहाँ गायें आकर निःशंक होकर घांस चरने लगीं। अतः कुलपति के पास शिकायत पहुँचने पर उसने भगवान को कहा, ''हे वर्धमान! पक्षी भी दक्षतापूर्वक अपने घोंसलों की रक्षा करते हैं और आप तो राजकुमार होकर भी स्वाश्रय स्थान की रक्षा करने में अशक्त हैं।''

मन में दुःख होने के कारण भगवान ने निम्नलिखित – पाँच अभिग्रह लिये :–

(१) जहाँ अप्रीति हो ऐसे घर में रहना नहीं।
(२) जहाँ रहना पड़े वहाँ खड़े रहकर काउस्सग्ग ध्यान में रहना।
(३) गृहस्थ की विनय नहीं करनी चाहिए।
(४) प्रायः मौन रहना।
(५) कर–पात्र में भोजन करना।

तीसरा उपसर्ग –

अस्थिक ग्राम के बाहर शूलपाणि यक्ष

के मन्दिर में भगवान यक्ष को प्रतिबोध देने के लिये चातुर्मासार्थ पधारे। भगवान को ध्यानस्थ देखकर शूलपाणि उन्हें सताने के लिये उनके सिर, कान, नाक, नेत्र, दाँत, पीठ एवं नाखूनों में असह्य वेदना उत्पन्न करने लगा, फिर भी महावीर अटल रहे। अन्त में, यक्ष ने भगवान से क्षमा–याचना की और उनके समक्ष गीत गाने लगा। भगवान नें रात्रि के लगभग चार प्रहर तक यक्ष कृत उपसर्ग की अत्यन्त वेदना सही। प्रातः प्रभु को पल भर नींद आई और उन्होंने दस स्वप्न देखे। भगवान ने यक्ष के मन्दिर में ही आठ पक्षक्षमण करके अपना प्रथम चातुर्मास पूर्ण किया और वे मोराक सन्निवेश की ओर गये। तत्पश्चात् वहाँ से श्वेताम्बी नगरी की ओर विहार किया।

चौथा उपसर्ग –

श्वेताम्बी की ओर जाते हुए प्रभु को ग्वालों ने कहा, ''भगवन्! आप इस मार्ग से न जायें। मार्ग में कनकखल नामक तापस का आश्रम है जहाँ चण्डकौशिक नामक एक दृष्टि–विष साँप रहता है। उसने अनेक व्यक्तियों के प्राण ले लिये हैं।'' फिर भी भगवान महावीर चण्डकौशिक साँप को प्रतिबोध देने के लिये उसी आश्रम में गये और उसके बिल के समीप ही वे ध्यानस्थ रहे।

अपने स्थान पर भगवान को देख कर वह क्रोध से तमतमा उठा। उसने भगवान पर दृष्टिज्वाला फेंकी, फिर भी उन्हें निश्चल देख कर वह अधिक क्रोधित हो गया और उसने भगवान के चरण में डंक मारे। उस समय भगवान के चरण में से दूध के समान श्वेत रुधिर निकलता देख कर वह चकित हो गया। उन कृपा–सिन्धु भगवान ने कहा – ''बुज्झ बुज्झ चंडकोसिआ!''

इस प्रकार भगवान की अमृत वाणी सुनकर उसे जातिस्मरण ज्ञान हुआ, जिससे अपना पूर्व भव जान कर उसने पश्चाताप स्वरूप अपने अपराध के लिए भगवान की तीन प्रदक्षिणा की और पन्द्रह दिन तक अपना मुँह छिपा कर स्थिर रहा। जाते–आते लोगों ने घी–दूध आदि से उसकी पूजा की। घी की सुगन्ध से आकर्षित चींटियों ने उसको अत्यन्त वेदना पहुँचाई, पर वह समतापूर्वक वेदना सहन करता रहा, वह अपने पाप की निन्दा करता रहा। एक पक्ष के पश्चात् वह साँप मर गया और आठवें सहस्त्रार देवलोक में देव बना। भगवान भी विहार करके अन्यत्र चले गये।

पाँचवाँ उपसर्ग –

सुरभिपुर में सिद्धदत्त नाविक लोगों को नाव में गंगा के पार ले जाना था। एक बार भगवान महावीर को नाव में बिठाकर नाव चलाने लगा। उस समय अचानक उल्लू के बोलने की अवाज सुनकर नाव में बैठे हुए क्षेमिल नामक ज्योतिषी ने कहा, ''आज हम नदी के पार जाते समय मरणान्त कष्ट पायेंगे पर इन महात्मा के प्रभाव से संकट टल जायेगा।'' जब नौका नदी की मझधार में आई तब भगवान के त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में आहत सिंह का जीव जो सुदंष्ट्र नामक देव के रूप में उत्पन्न हुआ था वह भगवान को नौका में बैठे देख कर पूर्व भव का बदला लेने के लिए वहाँ आया और उसने नौका को डुबोने के लिये अनेक उपद्रव किये। उस समय कंबल तथा शंबल नामक नागकुमार देवों ने आकर सुरक्षा की। उन्होंने उस सुदंष्ट्र देव को वहाँ से खदेड़ दिया और भगवान की स्तुति की। तत्पश्चात् भगवान नाव में से उतर कर राजगृही गये।

छठा उपसर्ग –

जब भगवान महावीर गोशाला के साथ मोराक सन्निवेश में गये तब उस स्थान के कोतवाल ने उन्हें जासूस समझकर पहले गोशाला को बन्दी बना दिया। तत्पश्चात् भगवान को बन्दी बनाते समय उत्पल ज्योतिषी की बहन सोमा तथा जयन्ती ने भगवान को पहचान कर उस कोतवाल को समझाया। कोतवाल ने उन्हें मुक्त कर दिया। भगवान विहार करके पृष्ठ चम्पापुरी गए।

सातवाँ उपपसर्ग –

श्रावस्ती से विहार करके भगवान महावीर हरिद्र सन्निवेश के बाहर हरिद्र वृक्ष के नीचे ध्यानस्थ रहे। वहाँ रात्रि में विश्राम करने वाले यात्रियों ने शीत से बचने के लिये अग्नि प्रज्वलित की थी, पर जाते समय वे उसे बुझा कर नहीं गये। वह अग्नि जलती–जलती ध्यानस्थ भगवान के पाँव तक पहुँची। पाँव जलने पर भी भगवान वहाँ से हटे नहीं, ध्यान में लीन रहे। गोशाला तो अग्नि देखकर भाग गया और जब अग्नि बुझ गई तब वह भगवान के समीप आया।

आठवाँ उपसर्ग –

नंगला से भगवान आवर्त पहुँच कर वहाँ बलदेव के मन्दिर में ध्यानस्थ बैठे। गोशाला वहाँ बालकों को डराने लगा। उन बालकों के पिताओं आदि ने सोचा कि यह तो कोई पागल भिक्षुक है, अतः इसे पीटने से क्या होगा? हमें तो इसके गुरु को ही पीटना चाहिए। जब वे भगवान पर प्रहार करने लगे तब बलदेव की मूर्ति ने हाथ में हल उठा कर उनकी रक्षा की। इस पर चकित होकर उन लोगों ने भगवान से क्षमायाचना की।

नवाँ उपसर्ग –

मोराक से भगवान कलंबुका गये जहाँ मेघ एवं कालहस्ती नामक दो रक्षक नियुक्त थे। मौनधारी भगवान को कालहस्ती ने चोर समझ कर बन्दी बना लिया। जब उसके भाई मेघ ने भगवान को पहचान लिया तब उसने अपने भाई के अपराध के लिए क्षमायाचना की और उन्हें मुक्त कर दिया।

दसवाँ उपसर्ग –

कलंबुका से भगवान अपने कठोर कर्मों का क्षय करने के उद्देश्य ले लाट देश गए, जहाँ के निवासी क्रूर थे और उन्होंने भगवान को नाना प्रकार से सताना प्रारम्भ किया। भगवान ने उन घोर उपसर्गों को समभाव से सहन किया और अपने कर्म क्षय किये। उसी देश में जब भगवान पूर्णकलश नामक अनार्य गाँव की ओर गए तब मार्ग में दो चोरों ने अपशकुन मान कर भगवान का संहार करने के लिए तलवार उठाई तब इन्द्र ने अवधिज्ञान से जान कर तुरन्त अपने वज्र से उनका काम तमाम कर दिया।

ग्यारहवाँ उपसर्ग –

तम्बाल से भगवान कूपिक सन्निवेश गए। वहाँ के अधिकारियों ने जासूस समझ कर भगवान तथा गोशाला दोनों को बन्दी बना लिया। वहाँ विजया एवं प्रगल्भा नाम की श्री पार्श्वनाथ भगवान की सन्तानीय साध्वीजी थीं, जो संयम का पालन करने में अशक्त होने से बाद में परिव्राजिका बनी थीं। उन दोनों ने भगवान को पहचान कर अधिकारियों से उन्हें बन्धन–मुक्त कराया।

बारहवाँ उपसर्ग –

कूपिक से भगवान महावीर वैशाली गये। बीच में गोशाला भगवान को छोड़कर अन्य मार्ग से चला। मार्ग में उसे पाँच सौ चोरों ने 'मामा' कहकर उसके कंधे पर बैठ

कर उसे अत्यन्त सताया। अब वह पुनः भगवान को ढूँढने लगा। वैशाली में भगवान लुहार की शाला में ध्यानस्थ रहे। वह छह माह की बीमारी से उठ कर लोहा घड़ने के हथियार सहित आया पर मन में अपशकुन का भ्रम होने से वह भगवान का संहार करने पर उतारू हो गया। तत्क्षण इन्द्र ने आकर उस लुहार का संहार किया।

तेरहवाँ उपसर्ग –

ग्रामक सन्निवेश से भगवान शालीशीर्ष गाँव के उद्यान में आकर ध्यान–मग्न रहे। उस समय वहाँ भगवान के त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव की कुमानिती रानी विजयवन्त जो मृत्यु के पश्चात् अनेक भवों में उत्पन्न होकर कटपूतना नामक व्यंतरी बनी थी, वह वैर का बदला लेने के लिये आई और अपने बालों में ठण्डा जल भर कर माघ महिने की कड़कड़ाती सर्दी में ध्यानस्थ भगवान की देह पर छिड़कने लगी। रातभर भगवान शीतोपसर्ग सहन करते रहे पर तनिक भी विचलित नहीं हुए। प्रभु को अटल देख कर वह शान्त हो गई और वैर भूल कर भगवान की स्तुति करने लगी। उस समय उपसर्ग सहन करने के कारण तथा छठ के तप से विशुद्ध बनते भगवान को लोकावधि अवधिज्ञान उत्पन्न हुआ।

चौदहवाँ उपसर्ग –

मर्दन नामक गाँव से भगवान महावीर बहुशाल गाँव के शालवन उद्यान में ध्यानस्थ रहे। वहाँ बसनेवाली शालार्या व्यन्तरी ने भगवान पर अनेक उपसर्ग किये, फिर भी भगवान विचलित नहीं हुए। अतः व्यन्तरी ने अपने अपराध की क्षमायाचना की और भगवान की महिमा की प्रशंसा की।

पन्द्रहवाँ उपसर्ग –

बहुशाल से वे लोहार्गल आये, जहाँ जितशत्रु राजा के सेवकों ने उन्हें जासूस समझ कर बन्दी बना लिया और राजा के समक्ष ले गये। वहाँ उपस्थित उत्पल ज्योतिषी ने उन्हें पहचान कर छुड़वाया। राजा ने अपने अपराध की क्षमायाचना की और भगवान का वन्दन किया। ज्योतिषी ने भी वन्दन किया।

सोलहवाँ उपसर्ग –

राजगृही में आठवाँ चातुर्मास पूर्ण करके वे अनेक कर्मों का क्षय करने के लिए व्रजभूमि में आये। वहाँ क्रूर म्लेच्छों ने भगवान पर अनेक उपसर्ग किये। भगवान ने सम भाव से उन्हें सहन किया। चौमासी तप–रत भगवान ने नियत स्थान प्राप्त नहीं होने के कारण नौवाँ चातुर्मास उसी भूमि में किया। तत्पश्चात् भी वे दो माह तक वहाँ विचरते रहे।

सौधर्म देवलोक में शक्रेन्द्र ने अवधिज्ञान से भगवान को ध्यान–मग्न देख कर देवों के समक्ष उनके धैर्य आदि गुणों की प्रशंसा की और कहा – "ध्यान–मग्न भगवान को तीन लोक के प्राणी भी विचलित नहीं कर सकते।"

इन्द्र के इन वचनों को असत्य करने के लिए उनके सामानिक देव संगम ने इन्द्र के समक्ष प्रतिज्ञा की कि मैं भगवान को ध्यान से विचलित करूगा। उसने निम्न उपसर्ग किये :–

(१) धूल की वृष्टि करके भगवान की देह धूल से ढँक दी। उनके नेत्र, नाक, कान आदि मिट्टी से ऐसे अवरुद्ध हो गये कि उनका साँस तक अवरुद्ध हो गया।

(२) वज्र के मुँह वाली चीटियाँ उत्पन्न की, जिन होंने भगवान की देह को चलनी जैसी बना दी।

(३) प्रचण्ड डाँस उत्पन्न किये जिनके काटने से उनकी देह से दूध के समान रक्त झरने लगा।

(४) तीक्ष्ण मुँहवाली घीमेल उत्पन्न की जो भगवान की देह पर चिपक कर सम्पूर्ण देह को छेदने लगी।

(५) प्रलय–ज्वाला से बिच्छू उत्पन्न किये जो भगवान को डंक मारने लगे।

(६) नेवले उत्पन्न किये जो अपनी दाढ़ों से भगवान की देह से माँस के टुकड़े काटने लगे।

(७) भयानक साँप उत्पन्न किये जो भगवान की देह को डसने लगे।

(८) क्रूर चूहे उत्पन्न किये जो भगवान की देह को काटने लगे और घावों पर पेशाब करने लगे।

(९) मदोन्मत्त हाथी उत्पन्न किये जो भगवान को सूंड से पकड़ कर उछालने लगे और पाँवों के नीचे उन्हें कुचलने लगे।

(१०) हथिनियाँ उत्पन्न की जो दंतुशल द्वारा भगवान पर प्रहार करने लगीं और उनकी देह को कुचलने लगीं।

(११) भयंकर पिशाच तलवार लेकर अट्टहास करता हुआ घोर उपसर्ग करने लगा।

(१२) क्रूर बाघ भगवान की देह नोचने लगे।

(१३) भगवान के माता–पिता के रूप धारण किये जो उनके समक्ष करुण विलाप करने लगे।

(१४) लोगों ने भगवान के पाँवों के मध्य आग जला कर चावल पकाना शुरू किया। आग से भगवान के पाँव भी जलने लगे।

(१५) चाण्डाल उत्पन्न किया जिसने भगवान के गले में, दोनों कानों में, भुजाओं में और जाँघ आदि पर पक्षियों के पिंजरे लटकाये। पक्षियों ने चोचों और नाखूनों से भगवान की देह छेद दी।

(१६) ऐसी वायु उत्पन्न की जो भगवान को उठा–उठा कर पछाड़ने लगी।

(१७) चक्रवात उत्पन्न किया जिसने भगवान को पहिये की तरह घुमाना प्रारम्भ किया।

(१८) संगमदेव ने एक प्राण–घातक काल–चक्र उत्पन्न किया और भगवान के सिर पर फेंका, जिससे भगवान कमर तक भूमि में धँस गये।

(१९) भगवान विचलित नहीं हुए अतः संगम ने रात्रि होते हुए भी प्रातःकाल उत्पन्न किया और कहा कि अब तो ध्यान समाप्त करने का समय हो गया। भगवान ने अपने ज्ञान से जान लिया कि अभी तक रात है, अतः वे तनिक भी डिगे नहीं।

(२०) देव–ऋद्धि उत्पन्न करके संगम भगवान को ध्यान से विचलित करने के लिए कहने लगा कि 'मैं आपका उग्र तप एवं सत्त्व देख कर प्रसन्न हुआ हूँ। आप जो चाहें वह माँगें।'

अनेक प्रलोभन देने पर भी जब वे विचलित नहीं हुए तब संगम ने देवलोक की देवाङ्गनाएँ उत्पन्न कीं जो हाव–भावों से भगवान पर अनेक उपसर्ग करने लगीं, फिर भी भगवान ध्यान–मग्न रहे।

तत्पश्चात् भगवान वहाँ से विहार करके अन्यत्र चले गये। संगम भगवान के आहार को अनेषणीय कर देता, वह अनेक उपसर्ग करता रहा।

छह माह तक उस दुष्ट देव के उपसर्गों

के कारण भगवान उपवास करते रहे। व्रज गाँव में छः मासी तप का पारणा करने के लिये जब वे गोचरी लेने गये तब संगम दिखाई दिया और आहार अनेषणीय किया जानकर वे लौट आये और गांव के बाहर ध्यान–मग्न रहे। हार–थक कर वह देवलोक में गया जहाँ से शकेन्द्र ने उसे निकाल दिया। तत्पश्चात् संगम मेरु पर्वत की चोंटी पर रहा, जहाँ वह एक सागरोपम आयुष्य पूर्ण करेगा।

सत्रवाँ उपसर्ग –

षण्मानि गाँव में आकर वे गाँव के बाहर ध्यानलीन रहे तब एक ग्वाला अपने बैल वहाँ भगवान के पास खड़े रख कर गायें दोहने चला गया। ग्वाला जब लौट कर आया तब वहाँ बैल नहीं मिले। तब उसने ध्यान–लीन भगवान को पूछा, ''मेरे बैल कहाँ गये ?'' ध्यान के कारण मौन भगवान ने जब उसे कोई उत्तर नहीं दिया, तब उसके पूर्व भव के संस्कार ताजे हो गये। त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में शय्यापाल के कानों में गर्म सीसा डलवा कर जो कर्म उपार्जन किया था, वह अब उदय में आया। क्रोध–वश उस ग्वाले ने शरकट वृक्ष के काष्ठ की दो कीलें बना कर भगवान के दोनों कानों में ऐसे ठोक दीं कि वे दोनों परस्पर मिल गई और बाहर दिखाई देती कीलों के किनारे काट दिये, फिर भी भगवान तनिक भी विचलित नहीं हुए।

मध्यम अपापापुरी में सिद्धार्थ तथा उसके मित्र खरक वैद्य ने भगवान के कानों में से वे कीलें निकाल दीं। जनता ने वहाँ एक देवालय का निर्माण कराया। मरणोपरान्त वैद्य तथा सिद्धार्थ स्वर्ग में गये और ग्वाला सातवें नरक में गया।

अठारहवाँ उपसर्ग –

केवलज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् भगवान महावीर एक बार श्रावस्ती आये। उस समय गोशाला भी ''मैं जिन हूँ, मैं जिन हूँ'' ऐसा प्रचार करता हुआ वहाँ आया। तब वहाँ ऐसी बात फैली कि श्रावस्ती में दो जिन हैं। गौतम को शंका होने पर उन्होंने भगवान को समाधान पूछा। भगवान ने गोशाला के सम्बन्ध में गौतम को सब कुछ बता दिया। यह जान कर गोशाला क्रोधित हो गया। कुछ समय के पश्चात् वह भगवान के पास आकर बोला, ''हे काश्यप ! तू मेरे सम्बन्ध में ऐसी बातें क्यों करता है ?'' भगवान का तिरस्कार दो मुनियों से सहन नहीं हुआ। वे बीच में बोले। अतः तेजोलेश्या से गोशाला ने उन मुनियों को जला कर भस्म कर दिया। अन्त में, उस दुष्ट ने भगवान पर भी तेजोलेश्या छोड़ी, परन्तु वह तो भगवान को तीन प्रदक्षिणा देकर गोशाला की देह में प्रविष्ट हो गई, जिससे उसकी सम्पूर्ण देह जल गई और सातवीं रात्रि में उसकी मृत्यु हो गई। तेजोलेश्या के प्रभाव से भगवान को भी छह माह तक खून की दस्ते लगती रहीं।

★ ☆ ★ ☆ ★ ☆ ★ ☆ ★

क्षणिका

महावीर का नाम
सौ बार उच्चारने के बजाय
महावीर–प्रणीत एकाध आचरण
जीवन में उतार लें,
भव–पर–भव सुधार लें।

★ ☆ ★ ☆ ★ ☆ ★ ☆ ★

श्रमण भगवान महावीर का अनेकान्त-दर्शन

—उपाध्याय श्री अमरमुनि

विश्व के निष्काम लोकोपकारी महापुरूषों के अपने- अपने विशिष्ट दर्शन होते है। दर्शनो में उनकी अपनी कल्याणकारी विचार-धारा प्रतिबिम्बित होती है। उसके द्वारा युगानुरूप जनकल्याण का पथ प्रशस्त होता है। फल- स्वरूप मानव- जीवन की समस्याओं का किसी-न-किसी रूप में समाधान हो जाता है और मानव दुख: के दावानल में से निकलकर सुख के शान्त-शीतल नन्दन कानन में पहुँच जाता है।

श्रमण भगवान् महावीर का भी एक महान् दिव्य दर्शन है। वह केवल कल्पना की कोई उड़ान नहीं है। वह सत्य की ठोस आधार भूमि पर स्थित है। दूसरी ओर वह केवल तात्कालिक दर्शन भी नहीं है, जो क्षणिक समाधान करे और समाप्त हो जाए।

मानव-जीवन की धारा अनन्त है। अत: उसके जीवन संघर्ष से संबंधित समस्याओं की धारा भी अनन्त है। भगवान् महावीर का दर्शन भी अनन्त कालीन शाश्वत दर्शन है। अत: वह अनन्त अतीत से लेकर अनन्त भविष्य तक मानव- जीवन की प्रत्येक समस्या का यथोचित स्पष्ट समाधान अपने में समाहित किए हुए है।

भगवान् महावीर के दर्शन का नाम है- अनेकान्त दर्शन। सत्य अनन्त है और जीवन की समस्याएँ भी अनन्त है। अत: अनेकान्त-दर्शन भी अनन्त है। उसे हम जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान करने के कारण जीवन-दर्शन भी कहते हैं।

अनेकान्त का विवेचन अनेक प्राचीन ग्रन्थों में तो हुआ ही है। और बड़े विस्तार के साथ हुआ है। तदनन्तर सर्व साधारण जनता की लोक- भाषाओं में भी उसके विवेचन की धारा यथा-प्रसंग प्रवाहित होती रही है। जैनेतर दर्शनों में भी यत्र- तत्र अनेकान्त दर्शन की झलक मिलती है। महर्षि व्यास ने तो महाभारत में धर्म की व्याख्या ही अनेकान्त के आधार पर की है। वे अनेकान्त शब्द का प्रयोग करते हुए स्पष्ट कहते हैं—

''अनेकान्तं बहुद्वारं, धर्ममाहु मनीषिण:''

—महान् मनीषियों ने बहुसंख्य द्वार वाले अनेकान्त को धर्म कहा है।

प्राचीन ग्रन्थों में **सदसद्वाद**, नित्यानित्यवाद, भेदाभेदवाद एवं एकत्व-अनेकत्ववाद आदि विभिन्न रूपों में अनेकान्त - दर्शन की गूढ चर्चा की है। उक्त वादों के खण्डन - मण्डन के सम्बन्ध में बड़े-बड़े विशाल काय ग्रन्थ समय-समय पर निर्मित होते रहते हैं।

प्रस्तुत लेख में मैं उन गूढ़ चर्चा एवं विचर्चाओं में नहीं जा रहा हूं। अन्य अनेक विद्वानों ने भी अपने-अपने लेखों में विस्तृत रूप से चर्चा की है। अनेक महानुभावों ने तो इस विषय पर अनेक छोटे-बड़े ग्रन्थ भी लिखे हैं।

अस्तु मैं यहाँ सरलाति-सरल पद्धति से जीवन-उपयोगी चर्चा करूँगा। साथ ही

स्पष्टीकरण की दिशा का पथ प्रशस्त करने के लिए उपयोगी दृष्टान्त भी उपस्थित करता रहूंगा।

आज का युग जटिलता का युग है। मानव- जीवन- अनेक समस्याओं में उलझता- उलझता मत्स्य जीवियों का ही स्पष्ट एक सघन जाल बन गया है। व्यक्ति से लेकर परिवार, समाज तथा राष्ट्र सभी अनबूझ पहलियों के जाल में उलझे हुए हैं। ये ही नहीं, विश्व के धर्म भी जो चिर- काल से समस्याओं के सुलझाने के दावेदार रहे, वे भी वाद- विवादों के शाब्दिक जाल में उलझ गए हैं। कर्तव्य की दृष्टि से मानव दिशाहीन हो गया है।विवेक एवं विचार हीनता की दृष्टि से वह पशु- जगत के निकट पहुँच रहा है। जिधर देखो और सुनो, भ्रष्टाचार, कलह- विग्रह, लूट- मार, आत्म- हत्या तथा हत्या काण्ड के दिल दहलाने वाले समाचार ही मिलते हैं। साप्ताहिक एवं दैनिक आदि समाचार पत्रों के पृष्ठ इन्ही विभत्स समाचारों की अभद्र कालिमा से अंकित क्या, कलंकित मिलते है। सुभद्र जैसा प्रथम तो कुछ मिलता ही नहीं है और यदि कभी कुछ मिलता भी है, तो वह इतनी अल्प मात्रा में होता है कि जो अस्तित्व होते हुए भी अनस्तित्व जैसा प्रतिभासित होता है।

क्या कारण है, इस स्थिति का? मुख्य कारण यही है कि मनुष्य अपने से भिन्न व्यक्ति, जाति एवं धर्म, पंथ आदि के विचार समत्व दृष्टि से न सुनना चाहता है और न समझना। आज बुद्धिवाद का अहं अपने में ही सब- कुछ निगलने के लिए अजगर की तरह फूंकार मार रहा है। आज प्राय: प्रत्येक व्यक्ति अपने विचार को ही सर्वोपरि समझता है। ऐसा लगता है, जैसे वही विश्व के त्रि-काल वर्ती सत्यों का एकमात्र सौदागर है। मैं ही सच्चा हूँ। मेरी ही बात सच्ची है। और, जो कुछ भी है असत्य है—यही तो वह अहं है, जो व्यर्थ के, व्यर्थ के ही नहीं, अनर्थकारी संघर्षो को जन्म देने वाला है। संघर्षो के कारण मानव समत्व दृष्टि से वंचित हो गया है। अत: वह अन्दर और बाहर—दोनो ही नेत्रों से इतना अन्धा हो गया है, कि उसे अपने अस्तित्व के अतिरिक्त अगर कोई अस्तित्व दिखाई ही नहीं देता।

अत: आज अपेक्षा है, मानव- जीवन में पुनर्स्थापना के हेतू समत्व योगी महाश्रमण के अनेकान्त- दर्शन की। अनेकान्त-दर्शन मानव जाति को परस्पर जोड़ता है, तोड़ता नही। वह शान्त एवं समत्व दृष्टि से एक दूसरे को सही रुप में समझने की योग्य प्रेरणा देता है। जहाँ यह दृष्टि होती है, भला वहाँ संघर्ष कैसा? और जहाँ संघर्ष नहीं, वहाँ ये बलात्कार एवं हत्या काण्ड आदि अशुभ कार्य- कलापों का अस्तित्व कैसा?

सत्य अनन्त है। वह किसी एक वैचारिक आँख से ही नहीं देखा जा सकता। उसके अपूर्व दर्शन के लिए अनन्त चक्षु होने चाहिए। यदि अनन्त चक्षु न हो सके, तब भी अनेक चक्षु तो हो ही। अनेक दृष्टियों से वस्तु-तत्त्व का दर्शन एवं परीक्षण करना ही अनेकान्त है। जहाँ दृष्टि में अनेकान्तता है, वहाँ परस्पर में भ्रातृ भावना की स्नेहशीलता स्वत: समुद्भासित हो जाती है। अनेकान्त दृष्टि को समझने के लिए जैसा कि मैंने पूर्व कहा है— कुछ सरल

उबला हुआ पानी पीजिये

– डॉ. श्री जे. सी. वैद (एम.एस.)

प्रत्येक व्यक्ति यह अच्छी तरह जानता है कि पानी कैसे पीना चाहिये। सम्भवतः यही एक मात्र ऐसा कार्य है जिसे नवजात बिना किसी प्रशिक्षण के जानने लगता है। लेकिन निश्चित तौर पर जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग जो पानी वह पी रहा है उसके बारे में नहीं जानता।

हजारों वर्ष पुराना जैन दर्शन आधुनिक विज्ञान पर आधारित है। नई पीढ़ी की आधुनिक विज्ञान में असीम आस्था है और वह उसके तर्ज पर आंख मूंद कर नाचती है। जब जैन धर्म के सिद्धान्त निरूपित हुए तब लोगों को उबला हुआ पानी पीने को कहा गया।

चिकित्सा के क्षेत्र में हुए अनुसंधान ने यह सिद्ध कर दिया है कि सही अर्थ में पानी कभी शुद्ध नहीं होता उसमें कुछ अशुद्धताएं रहती हैं, विलयित तथा स्थगित विलयित अशुद्धताएं हैं – हाइड्रोजन सल्फाइड, कार्बनडाई आक्साइड, अमोनियम नाइट्रोजन, सभी तरह की गैसे कैलसिमय एवं मेग्निशियम के लवण तथा खनिज जबकि स्थगित अशुद्धताएं मिट्टी, धूल, रेत तथा कीचड़ के रूप में होती है। दूसरी अशुद्धताएं जिन्हें हम नंगी आंखों से नहीं देख सकते हैं पौधों तथा जीवों के रूप में होती हैं। इन्हें प्राकृतिक अशुद्धताएं भी कहा जाता है और यह अशुद्धताएं वातावरण, बहाव क्षेत्र तथा भूमि से मिलती हैं। मनुष्य का स्वास्थ्य दूषित जल से प्रत्यक्ष या आहार द्वारा प्रभावित हो सकता है। दूषित जल के सेवन से पीलिया, हैजा, मियादी बुखार, दस्तें पेट में कीड़ोंवाली बीमारियां होती है जो बीमार का जीवन तक ले सकती हैं।

वर्तमान समय में बढ़ते हुए शहरीकरण तथा उद्योगीकरण के कारण उबला हुआ पानी पीना और अधिक जरूरी हो गया है विश्व स्वास्थ्य संगठन पानी को दूषित होने से रोकने के लिये सचेष्ठ है। भारत सरकार भी तत्संबंधी एक अधिनियम १९७४ में बना चुकी है आजकल के जल से होनेवाली बीमारियों के इलाज के काम आनेवाली दवाइयों की खपत बढ़ती जा रही है। समाचारपत्रों में समय समय पर देश के कुछ भागों में दूषित जल के कारण हैजा, पीलिया, आंत्रशोध आदि बीमारियों के महामारी के रूप में फैलने के समाचार प्रकाशित होते ही रहते हैं। आज जबकि विश्व भर के वैज्ञानिक दूषित जल से उत्पन्न जल समस्या के कारण चिन्तित हैं तब जैन दर्शन लोगों को उबला हुआ पानी पीने को कह कर उसका समाधान निकल सकता है इस तरह जिस समस्या का आजकल सामना किया जा रहा है उसका समाधान जैन आचार्यों (संतों) ने हजारों वर्ष पूर्व ही कर दिया था पाठकों के मन में संभवतः यह जिज्ञासा उत्पन्न हो सकती है कि जब पानी उबाला जाता

है तो इसमें रह रहे जीवीणु नष्ट होते होंगे जो जैन धर्म या अहिंसा के सिद्धान्त के विरूद्ध हैं। मैं अपने मित्रों को बताता रहता हूं कि पानी को उबालने से ८ घंटे बाद तक उसमें जीवाणु पैदा नहीं होते जबकि बिना उबले पानी में उनकी वृद्धि बराबर होती रहती है। इस तरह बिना उबला पानी पीने से ऐसे जीवाणु दस गुना नष्ट होते हैं। अतः बिना उबले पानी में "हिंसा" अधिक है। जैन धर्म में यह बताया गया है कि उबला पानी सात या आठ घंटे के भीतर काम में ले लेना चाहिये और उसके पश्चात् ताजा उबला हुआ पानी अगले सात या आठ घंटे में काम में ले लेना चाहिये।

आजकल स्वास्थ्य के आधार पर उबला हुआ पानी पीने को कहा जाता है। आज यह विचार जो नया लगता है उतना ही पुराना है जितना जैन धर्म, वह धर्म जिसने आधुनिक विज्ञान तथा औषधि शास्त्र को जन्म दिया है।

गजल

महावीर चरणों में . . . !

प्रभु महावीर चरणों में मेरा प्रणाम हो जाए।
अहिंसा के पुजारी सा कोई इक काम हो जाए।।
प्रभु महावीर . . .

मिटे हिंसा की बर्बरता, अहिंसा धर्म को समझें।
सभी मन्दिर व मस्जिद, आज शान्ति–धाम हो जाएँ।।१।।
प्रभु महावीर . . .

अकल–शकल जुदा चाहे, मगर है एक ही आत्मा।
करे जग में भले सब काम, और भगवान हो जाएँ।।२।।
अहिंसा के पुजारी . . .

सभी को हक है जीने का, करें निष्काम–कर्मों को।
विश्व–बंधुत्व का संदेश, अब फरमान हो जाए।।३।।
अहिंसा के पुजारी . . .

दहेजों की बलि चढ़कर, क्यों जिन्दा दुल्हनें जलतीं।
लगें अब बोलियाँ नारी की, और नीलाम हो जाएँ।।४।।
अहिंसा के पुजारी . . .

अणु–परमाणु–एटम बम, लिये बैठी है चंगेजी।
न जाने कब यहाँ सारी, जमीं शमशान हो जाए।।५।।
अहिंसा के पुजारी . . .

है पापी "पारदर्शी", तू पड़े मत पंथ–पंकों में।
न जाने किस गली में, जिन्दगी की शाम हो जाए।।६।।
अहिंसा के पुजारी . . .

– श्री छन्दराज पारदर्शी

सरे राह चलते – चलते

- **'पेप्सी' के भीतर में** – 'पेप्सी' नामक विदेशी कंपनी के विषय में भीतर की जानकारी प्रस्तुत करती हुयी श्री राजेन्द्र द्वारा लिखित अंग्रेजी पुस्तक 'दी रीयल पेप्सी, दी रीयल स्टोरी' ३६ एशियाड गेम्स विलेज, नयी दिल्ली से प्रकाशित हुयी है, जिसमें बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा चलायी जा रही गैर रीतियों का भंडा–फोड किया गया है। इन कम्पनियों द्वारा टी. व्ही. या दूसरे विज्ञापनों में खूब खर्च किया जाता है। पच्चीस या तीस पैसे की लागत वाली बोतल के स्वाद के नाम पर पांच–पांच रूपये वसूल किये जाते हैं, उन्हें मालूम नहीं है कि प्रत्येक घूंट में एक–एक रूपया हम विदेश भेज रहे हैं इसके बावजूद भी कोई पौष्टिक तत्व हम नहीं पाते। जापान, ताइवान, चीन या जर्मनी जैसी हमारे यहाँ यदि जागृत प्रजा होती तो सरकार कदापि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को यहाँ आमंत्रित करने की हिम्मत नहीं करती।

- **सरकारी एजेन्सियाँ** – अपने यहाँ कोई भी आयात–निर्यात का व्यापार सीधे नहीं हो सकता। किसी भी व्यापारी को आयात–निकास सरकारी एजेन्सी 'स्टेट ट्रेडींग कार्पोरेशन' के जरिये करना पड़ता है, जिसमें प्रतिशत के द्वारा अब्जों रूपयों का भ्रष्टाचार होता है। इस भ्रष्टाचार को यदि समाप्त कर दिया जाए तो देश की प्रजा को एक रूपया भी किसी भी प्रकार टेक्स नहीं भरना पड़े, इतना समृद्ध यह देश है किन्तु हमारे राजनेता ऐसा होने नहीं देंगे।

- **आर्थिक आत्मनिर्भरता के खोखले दावे** – देश में रोजगार बढाने और आर्थिक आत्मनिर्भरता लाने के लिए आज सरकार बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए पलक–पावड़े बिछा रही है, किन्तु ये दोनों ही दावे खोखले हैं। उदाहरण के लिए, पेप्सीकोला ने भारत में ५०,००० लोगों (२५,००० केवल पंजाब में) को रोजगार देने का आश्वासन दिया था, पर इससे केवल ४८९ लोगों को काम मिला।

- **रखरखाव का खर्च** – हमारे नेता जनता को आर्थिक कर कसर करने के लिए बचत हेतु भाषण देना नहीं चुकते, लेकिन स्वयं के सरकारी मकानों की शोभावृद्धि हेतु रंग–रोगान या फर्नीचर बदलने में जो खर्च करते हैं वही बचा दिया जाय तो काफी बचत हो सकती है। पिछले आठ साल में सिर्फ प्रधानमंत्रियों के मकानों के रखरखाव में तीन करोड़ रूपये खर्च हुए हैं।

- **लूट सके तो लूट** – लोकसभा में निर्वाचित अपने कहे जानेवाले सेवकों ने नेहरूजी, इंदिराजी, मोरारजी, वि. पी. सिंह, चंद्रशेखरजी आदि की छत्र छाया में आझादी के पश्चात हमारे और आपके टेक्स द्वारा प्राप्त पैसों पर जो सुख सुविधायें प्राप्त की है उसकी बराबरी दुनियाँ में कहीं नहीं की जा सकती। अपने भूतपूर्व महाराजाओं की सुख सामग्री भी इनके आगे फीकी लगती है। विधानसभ्यों को राज्यों में एवं सांसदों को दिल्ली में तमाम सुख सुविधाओं से युक्त बंगले दिये गये हैं उनमें कई नेता तो आज सांसद नहीं होते

हुए भी अभी तक उन्होंने बंगले खाली नहीं किये है एवं कइयों ने उसे भाडे से देकर उपर की कमाई भी प्रारंभ कर दी है।

■ **दवाओं के नाम पर जहर** – देश में इस समय बहुराष्ट्रीय कंपनियां पांच सौ से ज्यादा दवायें करीब तीन हजार ट्रेड नामों से बेच रही है। जबकि इन दवाओं में बहुत सी दवाओं पर दुनियाँ के कई देशों यहाँ तक कि बांगलादेश, पाकिस्तान, मलेशिया, फिलीपीन्स इजराइल और जार्डन जैसे छोटे देशों में भी प्रतिबंध है। दूसरी तरफ बड़े देशों में तो पहले से ही प्रतिबंध लगा है, लेकिन भारत में ऐसी बहुतसी दवायें धड़ल्ले से बेची जा रही है। जैसे – क्लोरोस्ट्रेप्र, कूपर स्ट्रेप, ओरोबोलीन, ड्यूरोबोलीन, काइमर फोर्ट, डोकोबोलीन, पेरीड्रान, आक्सीफिनबूटाजोन, एम्बिक्विलॉन, मेस्टोजनफोर्ट, ओरसेक्रानफोर्ड, एस.जी.फोर्ट और ट्राइनार्जिक जैसी दवायें। इन दवाओं के इस्तेमाल से कैंसर, लकवा, अंधापन, विकलांगता और कई तरह की बिमारियाँ पैदा हो सकती है। इन दवाओं को बनानेवाली कम्पनियों में 'मे. ऍण्ड बेकर', सीबा, वेलकमबरोज, पार्कडेविस, बूट्स इंडिया और इंफार जैसी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ प्रमुख है।

■ **स्वार्थ और राष्ट्रप्रेम** – आज डगर–डगर पर अनीति, अधर्म का आचरण करते हुए हमने राजसत्ता ऐसे ही लोगों के हाथ में सौंपकर भ्रष्टाचार की शरणागति स्वीकार कर ली है। आज अच्छा व ईमानदार आदमी सत्ता पर आना खूब मुश्किल है। कोरी शिष्टाचार की बातें करने से राष्ट्रप्रेम नहीं आ सकता। उसकी पूर्व भूमिका के रूप में मूल बात स्वार्थ मुक्ति की है। जब तक हम सभी निजी स्वार्थ को गौण नहीं करेंगे, तब तक राष्ट्रप्रेम की बात होती ही रहेगी।

आपका पत्र मिला – – – –

☛ पत्रिका आपकी समय–समय पर संप्राप्त होती रही। इससे मेटर भी हमें खुब मिलता है। इतने थोड़े समय में जो प्रगति कर दिखाई है वह परम सराहनीय है। **– आगममुनि**

☛ शाश्वत धर्म नियमित मिल रहा है जो उच्चस्तरीय सामग्री आप दे रहे हैं पढ़कर दिशा मिलती है एवं सुखद अनुभव होता है। **– ललितगर्ग (दिल्ली)**

☛ शाश्वत धर्म का फरवरी अंक पढ़ा। बहुत–बहुत अच्छा लगा। इस अंक में प्रकाशित सरे राह चलते–चलते व पशुओं का उत्पीड़न हमारा मनोरंजन एवं और भी नए समाचार व नई जानकारी मिली। आशा है कि आगे भी हमें ऐसी ही जानकारी देकर हमें सही मार्गदर्शन करेंगे। आपका सम्पादकीय भी विशिष्ट रहा। धन्यवाद।

– शैलेश धाकड़–मैसुर (कर्नाटक)

☛ शाश्वत धर्म की प्रगति एवं दुरदर्शी तथा उत्तम सम्पादन के लिए आपको जितना धन्यवाद दिया जाय कम होगा। **– उपारानी सुरेन्द्रसिंह लोढ़ा – आगरा (यू. पी.)**

☛ शाश्वत धर्म मार्च १९९२ का अंक प्राप्त हुआ ज्ञान कसौटी ज्ञानवर्धक रहा, सब लेख रूचिकर और उत्तम है छपाई बहुत स्वच्छ और सुन्दर है। शाश्वत धर्म का प्रसार प्रचार दिन दूना बढ़ रहा है इसका मुख्य कारण इसकी विशेषताएं है। धन्यवाद।

– ललितकुमार जवेरचंद भंडारी – शहापुर (कर्ना.)

ઐતિહાસિક અને અદ્વિતીય સિધ્ધાચલ મહાતીર્થ નવ્વાણું યાત્રા

પ. પૂ. આચાર્યદેવ રાષ્ટ્રસંત, સાહિત્ય મનિષી શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરીશ્વરજી મહારાજાની પરમ પાવન નિશ્રામાં સિધ્ધાચલજી મહાતીર્થનો નવ્વાણું યાત્રાનો અનોખો શાનદાર કાર્યક્રમ ખૂબજ ઉલ્લાસ અને ઉમંગભેર ચાલી રહ્યો છે.

પૂજ્યપાદ ગુરૂદેવશ્રી મધ્યપ્રદેશમાં પ્રાતઃસ્મરણીય પ્રભુશ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સુરીશ્વરજી મ. સા. ની ક્રિયોદ્ધારભૂમિ જાવરા શહેરમાં ખૂબ જ ધામધૂમ પૂર્વક ચાતુર્માસ ગાળી, બાગનગરે ઉપધાન તપ સંપન્ન કરાવી તાબડતોબ પાલીતાણા તરફ ઉગ્ર વિહાર કરી પધાર્યા.

મહાવદ-૨ ના મંગળ પ્રભાતે હજ્જારો માનવ મહેરામણ સાથે પાલીતાણા શહેરમાં જોરદાર સ્વાગતપૂર્વક પૂજ્ય ગુરૂદેવશ્રીનો પ્રવેશ થયો અને...

મહાવદ-૩ ના મંગળ પ્રભાતે યતિન્દ્ર ભવન જૈન ધર્મશાળા થી ચતુર્વિધ સંઘ જય તળેટી પહોંચ્યો. તળેટીમાં આદિનાથ પરમાત્માની ચરણ પાદુકા સમક્ષ સામુહિક ચૈત્યવંદન-ગિરિરાજવંદન થયાં.

જય જીય શ્રી આદેશ્વર.....

જય જય શ્રી સિધ્ધાચલ....ના ગગનભેદી નારાઓ વચ્ચે બધાએ નવ્વાણું યાત્રાનો શુભારમ્ભ કર્યો.

યુગાદિદેવ, પ્રથમ તીર્થંકર આદિનાથ પરમાત્મા સિધ્ધાચલ તીર્થની પાવનભૂમિ પર નવ્વાણું પૂર્વ વાર સમોસર્યા હતા. આ પૂર્વ નવ્વાણું વાર એટલે શું? એ જિજ્ઞાસા આપણને ય સહજપાણે મગેજને?

જૈનાગમોમાં કહેવાયું છે ૮૪ લાખ વર્ષને ૮૪ લાખ વર્ષ વડે ગુણિત કરવાથી એક પૂર્વ થાય. આવાં-આવાં નવ્વાણું પૂર્વ વાર ભગવાન સિધ્ધાચલની પાવનધરા ઉપર પધાર્યા હતા. અનંત સિધ્ધ ભગવંતોનું સિધ્ધિક્ષેત્ર સિધ્ધાચલ મહાતીર્થ છે.

પરમાત્માની નવ્વાણું પૂર્વ યાત્રાની સ્મૃતિ વર્તમાન કાળે ભાવુકો નવ્વાણું વાર સિધ્ધાચલની યાત્રા કરી પોતાનું જીવન ધન્ય બનાવે છે.

શાસ્ત્રકારો ફરમાવે છે

દીનોધ્ધાર કર્યો નહીં, લહ્યો ન શાસ્ત્ર વિચાર;
સિધ્ધાચલ ફરસ્યો નહીં, એનો એળે ગયો અવતાર॥

જો જીવન એળે ન જવા દેવું હોય તો એકવાર તો અવશ્ય સિધ્ધાચલ મહાતીર્થની યાત્રા કરવીજ રહી...સિધ્ધાચલ મહાતીર્થની નવ્વાણું યાત્રાના આ સામુહિક આયોજનમાં ગુજરાત, રાજસ્થાન અને મધ્યપ્રદેશના થરાદ, ડીસા, વાસણા, જેતડા, ઈઢાટા, નારોલી, કુંભારા, પાલનપુર, દુધવા, લુવાણા, મહેસાણા. પાટણ, અમદાવાદ, નડીયાદ, આણંદ,

સુરત, નવસારી, મુંબઈ, થાણા કલ્યાણ, ભીનમાલ, મોદરા, આહોર, ભૂતી, ઉજ્જૈન, ઈન્દૌર, રાણાપુર, ધાર, બાગ, જાવરા, રતલામ, પિપલોદા, કચનારા, રિંગણોદ, રાજગઢ, પેપરાલ, નીમચ, ખાચરોદ, નાગદા. વિગેરે વિવિધ ગામોમાંથી ૬૨૦ જેટલા આરાધક મહાનુભાવો નવ્વાણું યાત્રા કરવાના ઉલ્લાસ અને ઉભંગથી જોડાયા છે. દરરોજ સવારે ઉઘાડા પગે ગુરૂદેવશ્રીની નિશ્રામાં વાજતે-ગાજતે સિદ્ધાચલ મહાતીર્થની બબ્બેયાત્રાઓ સાત વર્ષથી માંડી સિત્તેર વર્ષની વયના યાત્રિકો કરી રહ્યા છે.

આરાધકો બંન્ને ટાઈમ પ્રતિક્રમણ, ગિરિરાજ ઉપર વિવિધ સ્થાને ચૈત્યવંદન, દરરોજ અષ્ટપ્રકારી જિનપૂજા વિગેરે આવશ્યક વિધિઓમાં જ લયલીન બની જાય છે.

બપોરના સમયે મહામહિમ સિદ્ધાચલ મહાતીર્થના મહાત્મ્યનું વિસ્તૃત વર્ણન, સિદ્ધાચલ ઉપર જિનમંદિર નિર્માતા પુન્યશાળી પુરૂષોનું, તીર્થોદ્ધાર કરાવનાર ભાગ્યશાળી મનુષ્યો અને દેવતાઓનું ભાવવાહી વર્ણન પૂ. ગુરૂદેવશ્રી નિયમિત, પ્રવચન દરમ્યાન મધુર વાણીમાં સમજાવે છે.

નવ્વાણું યાત્રાના યાત્રિકો, અને બહારગામથી આવનાર મહેમાનોની ભક્તિનો લાભ આયોજક થરાદ નિવાસી અદાણી કુંવરજીભાઈ દેવરાજભાઈ પરિવાર ખૂબજ ઉદારભાવે લઈ રહ્યા છે. ધન્ય જિન શાસન! ધન્ય રાષ્ટ્રસંત સૂરિવર !!

પ્રસ્તુતકર્તા : **મુનિ પ્રશાન્તરત્ન વિજય**

खरीदिये/ बांटिये

अंडे के बारे में १०० तथ्य

डा. नेमीचंद जैन

सचित्र रंग बिरंगी दुर्लभ जानकारियों से भरपूर एक ऐसी पुस्तक जिसकी अब तक हिन्दी उर्दू मराठी गुजराती में एक लाख से अधिक प्रतियां प्रकाशित होकर बिक चुकी है। और जिसके अंग्रेजी, असमी एवं तमिल संस्करण भी शीघ्र ही प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतः इसे स्वयं पढीए तथा उन हाथो तक पहुंचाइये जो अनजाने में अपने स्वास्थ के साथ क्रूर खिलवाड़ कर रहे हैं। और हमारे पर्यावरण अर्थ तंत्र, धर्म तथा हमारी सांस्कृतिक मर्यादाओं को नष्ट कर रहे हैं।

डाकव्यय सहित मूल्य-१००० प्रतियां-१०५० रुपये, ५०० प्रतियां- ५५० रुपये, १०० प्रतियां १२५ रु., ५० प्रतियां ६५ रुपये.

प्राप्तिस्थान- जे. के. संघवी (सम्पादक) शाश्वत धर्म कार्यालय जामली नाका, थाने ४००६०१

परिषद के प्रांगण से

शाखापरिषद सुरत के पदाधिकारियों का चयन किया जाकर **अध्यक्ष – श्री भूपेन्द्रभाई भणसाली, मंत्री – श्री महेशभाई मोरखीया** एवं **कोषाध्यक्ष – श्री रमेशभाई वोरा** को सर्वानुमतिसे निर्वाचित किया गया।

शाखा परिषद द्वारा सुरत में बाहरगांव से पधारे हुए जैन बन्धुओं के लिये भोजन को सुविधा हेतु न लाभ न हानि के आधार पर एक भोजनाशाला का शुभारंभ किया गया है।

रानापुर (म. प्र.) – महिला परिषद शाखा द्वारा भगवान आदिनाथ की पंचकल्याणक पूजा हर्षोल्लास के साथ पढ़ाई गई। स्थानीय महिला परिषद शाखा द्वारा प्रति रविवार को पूजन एवं धार्मिक परिचर्चा तथा धार्मिक ज्ञान पाठ शाला आदि का आयोजन किया जाता है।

नीमच (म. प्र.) – स्थानीय महिला परिषद के वार्षिक चुनाव सर्वानुमति से हुए जिसमें अध्यक्ष श्रीमती स्नेहलता पोरवाल, उपाध्यक्षा – श्रीमती सुशीला सेठीया, सचिव – श्रीमती ऋतु पोरवाल एवं कोषाध्यक्षा श्रीमती स्नेहलता चौधरी। निर्वाचित की गई।

– शाकाहार श्रावकाचार रथ का भव्य स्वागत –

थाने – अ. भा. जैन युवा फेडरेशन जयपुर के संयोजन में आयोजित शाकाहार श्रावकचार रथ का भव्य स्वागत दि. ७–३–१९९२ को स्थानीय जैन मंदिर के ट्रस्टी गणों, राजस्थान जैन संघ अध्यक्ष, एवं शहर की विभिन्न संस्थाओंद्वारा फूल मालाओं नारियल एवं तिलक द्वारा किया गया। शाकाहार रथ एक जुलुस के रूप में नगर का विभिन्न मुख्य भागों से होता हुआ स्थानीय गडकरी रंगायतन हाल पर पहुंच वहांपर जुलुस सभा में परिवर्तित हो गया, जहां नगर के कई गणमान्य वक्ताओ ने शाकाहार के होने वाले लाभ एवं इसकी विशेषताओं पर अपने ओजस्वी वक्तव्य द्वारा शाकाहार का महत्व एवं शाकाहार को अपनाने पर बल दिया। सभा समाप्ति के पश्चात जैन मन्दिर थाने की ओर से अतिथियों एवं सभामें उपस्थित सदस्यों को भोजन की व्यवस्था की गई।

मुनिराज श्री जयानंदविजयजी की निश्रा में विविध महोत्सव व ज्ञानशिबिर का आयोजन –

थराद –पू. मुनिराज श्री जयानंदविजयजी म. सा. मुनिमंडल सह आबू देलवाड़ा तीर्थ में तीर्थ माला के बाद वरमाण, डीसा, धानेरा आदि ग्रामों में धर्म प्रभावना करते हुए दि. ७ अप्रेल को थराद पधारे वहां चैत्री ओली की आराधना करवाकर आप दि. २० अप्रेल को आकोली की ओर प्रस्थान करेंगे। जहां अट्ठराह अभिषेक सह अष्टान्हिका महोत्सव ५ मई होगा। वहां से ग्राम डूडसी की ओर प्रस्थान होगा जहां स्व. मुनि श्री चैतन्यविजयजी के स्वर्गारोहण की प्रथम तिथी के उपलक्ष में १३ मई से अट्ठराह अभिषेक सह अष्टान्हिका महोत्सव होगा।

दि. १ जून से धाणसा में बालकों के हेतु १९ दिवसीय आध्यात्मिक ज्ञानशिबिर का आयोजन किया गया है। पश्चात पू. श्री मुनि श्री सांधू की ओर प्रस्थान करेंगे। स्मरण रहे पूज्य श्री का सं.२०४९ का आगामी चातुर्मास सांधु (जिला जालोर) में होना तय हुआ है।

समाचार सार

● **झकनावदा (म. प्र)** – प. पू. राष्ट्रसंत आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. सा. की प्रेरणासे प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी चैत्र वदी ८ दि. २६–३–९२ को श्री आदिनाथ जन्मकल्याणक महोत्सव स्नात्रपूजा, श्री आदिनाथ पूजा, ध्वजारोहण, श्री नवपदपूजन स्वामीवात्सल्य आदि विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया गया।

● **बीकानेर** – पू. आचार्य श्री नानालालजी म. सा. ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में मुनिप्रवर श्री रामलालजी म. सा. को युवाचार्य घोषित किया। इस अवसर पर समस्त चतुर्विध संघ ने युवाचार्य श्री रामलालजी म. सा. को हार्दिक बधाई दी। श्री रिध करणजी सियानी को सर्व सम्मत से अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ का भावी अध्यक्ष नियुक्त किया गया। पू. आचार्य श्री नानेश का आगामी चातुर्मास उदरायनगर में होगा।

● **आऊआ (पाली) (राज.)** – पू. आचार्य श्री विजयइन्द्रदिन्तसूरिजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती शिष्य पू. मुनिराज श्री नित्यानन्दविजयजी म. सा. आदिठाणा एवं पू. साध्वीजी श्री जगत प्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रामें आऊआ निवासी संघवी श्री मिश्रिमलजीसुराणा परिवार की ओर से परिवार के पूर्वजों के आत्म श्रेयार्थे एवं संघवी श्री मिश्रीमलजी एवं श्रीमती मुलीबाई के जिवितमहोत्सव निमित्ते श्री अर्हद महापूजन एवं पांच छोड़ के उद्यापन सहित भव्य पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन २०–३–९२ से किया गया।

● **दिल्ली** – पू. आचार्य श्री सुशीलकुमारजी द्वारा स्थापित आंतरराष्ट्रीय महावीर जैन मिशन को संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा मान्यता एवं सदस्यता प्रदान की है। किसी भी जैन संस्थान को मिलनेवाला यह पहला ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान है।

● **मालपुरा (राज.)** – पू. आ. श्री जिनकुशलसूरिजी म. सा. की ६५९ वीं स्वर्ग जयंती के अवसर पर फाल्गुन वदी अमावस्या (दि. ४–३–९२) को वरघोड़ा, सामूहिक पूजन एवं स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया।

● **खरसोदकला (म. प्र.)** – राष्ट्रसंत पू. आचार्य श्री जयंतसेन सूरिजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती मुनिराज श्री जगतचंद्रविजयजी म. सा. की निश्रा में दि. २३–३–९२ को जिनभक्ति महोत्सव विभिन्न प्रकार की पूजन के साथ मनाया गया।

● **चीरोला कला (म. प्र.)** – मुनिराज श्री जगत चंद्रविजयजी म. सा. के सानिध्य में (दि. १२–३–९२ से १६–३–९२) पंचान्हिका महोत्सव एवं–शांति स्नात्र सह अति उल्लास पूर्ण वातावरण में मनाया गया। अंतिम दिन जल यात्रा एवं स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया।

● **एलुर (आ. प्र.)** – पू. आचार्य श्री वारिषेणसूरिजी की निश्रामें सामूहिक आयंबिल की आराधना शा. घेवरचंदजी

फूलचंदजी की ओर से, सामूहिक एकासणा की आराधना श्री संघ की ओर से श्री पार्श्वकल्याण पूजन अमीत एम्पोरियम की ओरसें, बालकबालिकाओं की धार्मिक परिक्षा ली जाकर उत्तीर्ण प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरण शा. वीरचंदजी उत्तमचंदजी की ओर से, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ का जाप करने वालों को पुरस्कार वितरण शा. उम्मेदमलजी चुन्नीलालजी की ओर से किया गया। इसके अतिरिक्त सामूहिक चैत्यवन्दन, पौषध प्रति क्रमण एवं चन्दनबाला के तेले की आराधना आदि की विविध धर्म प्रभावनाएं सोल्लास सानन्द सम्पन्न हुई।

- **बम्बई** – पू. गणिवर्य श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. का ३३ वां जन्मदिन श्री गुमानमलजी लोढ़ा के मुख्य अतिथ्य में १७–३–९२ को सार्वजनिक रूप से भव्यसमारोह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पूजन पढाई गई। पू. गणिवर्य द्वारा निर्देशित मासिक पत्र **जिनेश्वर** का विमोचन किया गया। पू. गणिवर्यद्वारा रचित चौविसी एवं लिखित पुस्तक दिशाबोध का भी विमोचन किया गया।
- **आहोर** – स्थानीय राजमन्दिर (आश्रम) की २४ वीं वर्षगांठ (सिल्वरजुबली) पर भव्य वरघोड़े एवं स्वामीवात्सल्य के आयोजन सह त्रिदिवसीय कार्यक्रम ६, ७ व ८ मार्च को रखा गया।
- **नागपुर** – शाकाहार वर्ष के अन्तर्गत श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट द्वारा श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्बपंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव का आयोजन दि. २–२–९२ से ९–२–९२ तक किया गया।
- **दुर्ग** – पू. श्री रतनमुनिजी म. सा. का दुर्ग एवं आसपास के क्षेत्रों में २० दिवसीय प्रवास बहुतही प्रभावी एवं सफल रहा, प्रवास अन्तर्गत की गेंदमलजी बागमार ने आजीवनशील व्रत के ग्रहण किया। इस अवसर मुनि श्री ने फरमाया कि धार्मिक आयोजनों में धार्मिकता, सादगी एवं आध्यात्मिकता की प्रमुखता होना चाहिए। मालवीयनगर में भगवान वासुपूज्यस्वामी का जन्मकल्याणक एवं दादा कुशल सूरिजी का स्मृतिदिवस विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के साथ मनाए गए।
- **विजयवाड़ा** – पू. आचार्य श्री वारिषेण सूरिजी म. सा. की निश्रा में भगवान श्री आदिनाथ जी के जन्म कल्याणक निमित दि. २७–३–९२ को सामूहिक आयंबिलतप का आयोजन किया गया जिसमें १२५ आराधकों ने भाग लिया दि. २९ को ३२५ आराधकों को एकासना तप की आराधना शा. घेवरचंदजी बन्दा भी ओर से करवाई गई। तीन दिवसीय कार्यक्रम विभिन्न धर्मानुष्ठानों के साथ सानन्दसम्पन्न हुआ
- **बोरिवली (बम्बई)** – पू. मुनिराज श्री हरिशभद्रविजयजी म. सा. आदिठाणा का आगामी चातुर्मास श्री शत्रुंजय तीर्थपर होना तय हुआ अतः आप श्री का विदाईसमारोह का आयोजन बोरिवली पुष्पा पार्क में दि. ८–३–९२ को रखा गया जिसमें अर्न्तगत – श्री जैन तत्व ज्ञानविद्यापीठ पूना की १९९१ की परिक्षा केन्द्र बम्बई के पुरस्कारों का वितरण तीर्थंकर 'स्तवन' पुस्तक का विमोचन एवं शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण घोषणा की गई इस प्रसंग पर स्वामीवात्सल्य का आयोजन भी किया

गया। समारोह का आयोजन कार्टररोड़ जैन संघ बोरिवली, श्री लब्धिसूरि जैन ज्ञानमन्दिर ट्रस्ट–दादर, श्री जैन तत्व ज्ञानविद्यापीठ पूना एवं श्री जैन धार्मिक शिक्षण संव बम्बई द्वारा किया गया।

● **राजमहेन्द्री** – पू. मुनिराज श्री दिव्यरत्नविजयजी आदिठाणा एवं पू. साध्वीजी श्री मुक्ति श्री जी आदि ठाणा के उपदेश एवं प्रेरणा से श्री महावीर जैन धार्मिक पाठशाला का शुभारम्भ किया गया। पाठशाला का अध्यापन कार्य श्री एवं श्रीमती धर्मेन्द्र भाई पी. शाह कर रहे हैं।

● **बम्बई (पायधुनि)** – जैन धार्मिक शिक्षण संघ श्री शांतिनाथजी देरासर पायधुनी बम्बई–२ द्वारा निबन्ध प्रतियोगीता का आयोजन किया गया है। जिसमें २५१ रू. से ६५१ रू. तक के पुरस्कार देने का प्रावधान है। पूर्ण जानकारी हेतु उपरोक्त पते पर सम्पर्क करावें।

● **जालोर** – नन्दीश्वरतीर्थ में मुनिराज श्री मुक्तिविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में चैत्रमास की नवपद ओली की आराधना एवं अष्टादश अभिषेकसह जिनेन्द्रभक्ति महोत्सव का आयोजन दि. ७ अप्रेल से १८ अप्रेल तक किया जाएगा।

५०० लोगों ने शराब मांस एवं पशुवली का त्याग किया

ग्राम तुमडावदा (मन्दसौर) में २७ मार्च को धर्मपाल सम्मेलन का आयोजन श्री मानवमुनि की अध्यक्षता में किया गया। श्री गणपतराजजी बोहरा ने उदघाटन किया। श्री समीरमलजी कांठेड़ ने धर्मपाल सम्मेलन का उद्देश्य बताया श्री बालारामजी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। श्रीमती यशोदादेवी बोहरा ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि नैतिक जीवन बीताना ही मानव का कर्तव्य धर्म है। श्री गणपतराजजी ने अपने उद्‌घाटन भाषण में कहा कि आपस के भेदभाव मिटाकर एक बनों नैतिक शिक्षा का प्रचार हो, महिलाओं में शिक्षा का प्रचार हो, माताएं संस्कारी होगी धर्म भावना होगी तो समाज व राष्ट्र भी सुधरेगा। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री मानवमुनिने कहा कि मनुष्य का जीवन एक चिन्तामणी रत्न है मानव का हृदय सच्चा मन्दिर है, मन्दिर पवित्र होता है मनुष्य में जो शक्ति है उससे वह नर से नारायण एवं मानव से महामानव बन जाता है। मनुष्य से घृणा मत करो उसकी बुराईयों से घृणा करो प्राणीमात्र की रक्षा करो शराब पीना मांस भक्षण करना राक्षस वृत्ति है जो उसका त्याग करता है उसका परिवार सुखी व सम्पन्न होता है। बुराई को छोडो अच्छाई को ग्रहण करो। इस प्रभावी एवं ओजपूर्ण भाषण को सुनकर सम्मेलन में उपस्थित करीब ७० ग्रामों के ५०० लोगों ने सामूहिक रूपसे शराब मांस व पशुबलि का त्याग कर आदर्श स्थापित किया।

मांसमछली मार्केट के हटाने में शाकाहार महिला संघ की सराहनीय भूमिका

नीमच स्थानीय शाकाहारी महिला संघ के निरन्तर ३१ दिवसीय धरना एवं उपवास के साथ शांतिपूर्ण ढंग से अहिंसात्मक आन्दोलन के द्वारा स्थानीय सब्जी मंडी के समीप मांसमछली के मार्केट को हटाने में सफलता प्राप्त हुई। इस आन्दोलन में अ. भा. श्री. रा. जैन नवयुवक एवं महिला परिषदद की स्थानीय शाखा का भी सहयोग सराहनीय रहा।

अखिल भारतीय त्रिस्तुतिक जैन श्वेताम्बर श्री संघ की कार्यकारिणी समिती में गुजरात प्रांत के नाम निम्नानुसार हैं।

१. श्री नरपतलाल नागदासजी वोरा एण्ड कम्पनी, क्लॉथ मर्चन्ट, नगीना पोल, (रतन पोल) अहमदाबाद

२. श्री नरपतलाल मानचंद अदाणी–पारसमणी, कापडिया स्ट्रीट लवाड (रतनपोल) अहमदाबाद।

३. श्री कांतीलाल मोहनलाल वोहरा ('परिचय' पुरषोत्तम् चैम्बर, रतनपोल, अहमदावाद)

४. श्री धुड़ालाल छोटालाल संघवी'' * डी. विनोदकुमार एण्ड कम्पनी, नावगिरी डोहला रतनपोल, अहमदाबाद।

५. श्री वावजीभाई गगलदास वोहरा, २) शांतिकुंज कालोनी नगर, धी कांटा १ नगर सेठ बन्डो, अहमदाबाद।

६. श्री विनोदभाई पुनमचंद परिख एडिटर रखेवाल C.F. मार्केट, अहमदाबाद

७. श्री महेशकुमार नरपतलालजी देसाई ४५४/२ रचना सोसायटी, २२ गांधी नगर अहमदाबाद।

८. श्री पोपटलाल सरूपचंद धरू सुरत

९. श्री वाडीलाल गगलदास देसाई, वीर बाइमा भवन वेलीया पोल नगरवाड़ा ढाल नड़ियाद

१०. श्री महासुखलाल चुन्नीलाल वोहरा C/o.महावीर वस्त्र भण्डार, राजमहल रोड़–मेहसाणा।

११. श्री डोसी छोटालाल हाथीचंद, सलवीवाडो तिरोसेंरिया पाटण जि. मेहसाणा।

१२. श्री कब्बुलाल होलाभाई वोहरा (राजेन्द्र टेरीन सेन्टर नेक स्वामी नारायण मन्दिर भवसार वार्ड नड़ियाद।

१३. श्री रमणलाल हालचंद मोरखिया मु. कलोल।

१४. श्री लहरचंद सरूपचंद शाह/नुतन सोसायटी (पेपराल) डीसा जि. – बनासकांठा

१५. श्री मफतलाल कानजीभाई वेडल्या/शांतिनगर हाईवे भोरडु डीसा (बनासकांठा)

१६. श्री हरीलाल हाथीभाई घरू, मु. पो. पिलूदा तालूका थराद जि. बनासकांठा

१७. श्री हरिलाल अनुपचंद डोसी मु. पो. कारबन तालूका – थराद (बनासकांठा)

१८. श्री मोहनलाल हालचंद वोहरा मु. पो. नारोली तालूका – थराद जि. बनासकांठा

१९. श्री रजनीकांत गफुरभाई मेहता धानेरा जि. बनासकांठा।

२०. श्री चंदूलाल मोहनलाल सरपंच मेन बाजार धानेरा जि. बनासकांठा

२१. श्री भीकालाल जैसिंगभाई मोरखिया पो. लवाना व्हाया जेतड़ा तालूका दियोदर जि. बनासकांठा

२२. श्री बाबुलाल चुन्नीलाल मोरखिया पोस्ट लाखनी व्हाया डीसा जि. बनासकांठा

२३. श्री दुलीचंद नेत्तमल शाह मु. पो. नैनावा तालुका धानेरा जि. बनासकांठा

२४. श्री तिलोकचंद चुन्नीलाल शाह मु. पो. नैनावा जि. बनासकांठा

२५. श्री छोटालाल ककलदास अदाणी (स्वस्तिक सोसायटी, गेतमल दरवाजा पालनपुर, जि. बनासकांठा

२६. श्री कांतीभाई मोहनलाल अदाणी मैनेजर सवानी ट्रांसपोर्ट राजकोट

२७. श्री फोजलाल कोडीदास संघवी १३ शिवसागर एपार्टमेन्ट आशानगर मु. पो. नवसारी जि. बलसाड़

२८. श्री किर्तीलाल हालचंद वोहरा। हेपी होम प्लाट नं. ८२१ सेक्टर १ गांधीधाम जि. कच्छ

२९. श्री कालीदास नाथूभाई वोहरा मु. पो. दुधवा तालूका थराद जि. बनासकांठा

३०. श्री नटवरलाल भय्यालाल संघवी मैनेजिंग ट्रस्टी श्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, सदर बाजार, थराद, बनासकांठा

३१. ''चुन्नीलाल भय्यालाल पारिख, क्लाथ मर्चेन्ट सदर बाजार (थराद)

३२. हालचंद हाथीचंद संघवी, क्लाथ मर्चेंट अभू संघवीनीपोल बाजार थराद, बनासकांठा

३३. मफतलाल हालचंद धरू क्लाथ मर्चेन्ट बाजार थराद, बनासकांठा

३४. चम्पकलाल हालचंद देसाई, गोल्ड एण्ड सील्वर मर्चेन्ट बाजार थराद – बनासकांठा

३५. जयंतीलाल हरिलाल चौहली जवाहर चौक बाजार थराद जि. बनासकांठा

३६. मफतलाल नागरदास बोहरा नियर अभिनन्दन जैन टेम्पल बाजार थराद, बनासकांठा

—: शाश्वत धर्म को भेंट :—

५००/– भीनमाल निवासी हरण सांकलचंदजी अनाजी परिवार की ओर से मुनि श्री जयानंद विजयजी म. सा. की प्रेरणा से संघ निमित्ते भेंट।

५०/– अल्का सेल्स कार्पोरेशन–भीनमाल की ओर से भेंट।

शोक श्रद्धांजली

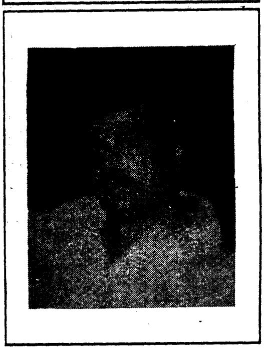

युवा कार्यकर्ता श्री अशोक देसाई व श्री अरविन्द वोहरा का दुर्घटना में असामायिक निधन।

★ थराद के दो नवयुवकों का श्री सिद्धाचल तीर्थ की यात्रा करके बम्बई की ओर आते हुए अकस्मात दुर्घटना में निधन हो गया। वोहरा अरविन्दकुमार कीर्तीलाल (३५) एवं देसाई अशोक कुमार पूनमचंद (३२)। अपने मधुर स्वभाव एवं कुशल व्यवहार के कारण दोनों युवक जवेरी बाजार ही नहीं अपितु समग्र जैन समाज में लोकप्रिय थे। अ. भा. श्री. रा. जैन नवयुवक परिषद शाखा थराद एवं बम्बई के सभी कार्य कर्ता और समाज के लोगों में भी दोनों ने अपनी कार्यक्षमता एवं लोकप्रियता की छाप छोड़ी थी। दोनों के आकस्मिक निधन से सम्पूर्ण समाज शोक विव्हल हो उठा।

शाखा परिषद थराद तथा श्री संघ थराद एवं श्री संघ बम्बई की ओर से मैनेजिंग ट्रस्टी श्री नटवरलालजी संघवी की अध्यक्षता में एक शोक सभा आयोजित की गई जिसमें समाज के सभी अग्रगण्य मान्य महानुभावों ने शब्दांजली अर्पित की दोनों युवकों के परिवार की ओर से श्री चंद्रकांतभाई वोहरा एवं श्री महेशभाई देसाई ने सभी का आभार माना।

★ अ. भा. श्वे. स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स, दिल्ली के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं अनेकानेक सभा संस्थाओं से जुड़े हुए प्रसिद्ध उद्योगपति श्री संचालालजी बाफना का उनके निवास औरंगाबाद में दि. १०–१–९२ को ७३ वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनकी इच्छानुसार मरणोपरान्त नेत्रों का दान किया गया।

श्री समीरमलजी जैन का महाप्रयाण

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के प्रथम कोषाध्यक्ष, धार जिला भाजपा के प्रमुख स्तंभ, अत्यंत लोकप्रिय, राष्ट्रभक्त, गरीबों के मसीहा टांडा क्षेत्र के समीरमल जैन का निधन हो गया। धार–बड़वानी मार्ग पर देवली के समीप आपका अंतिम संस्कार किया गया।

इस आदिवासी क्षेत्र के मसीहा के अंतिम दर्शन एवं संस्कार में लगभग ६ हजार आदिवासी सहित क्षेत्र के हजारों लोग थे। म. प्र. शासन की ओर से शिक्षामंत्री विक्रम वर्मा,

पूर्व वित्तमंत्री प्रधान, रमेश धाड़ीवाल, विधायक गणपतसिंह पटेल सहित सैकड़ों वरिष्ठ लोगों ने अंतिम संस्कार में भाग लेकर भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की।

श्री जैन के निधन के समाचार सुनते ही पुरे क्षेत्र मे सन्नाटा छा गया। जनता उनके अंतिम दर्शन के लिए उमड़ने लगी। यह एक विचित्र संयोग था कि जिन आदिवासी जनता की सेवा के लिए उन्होंने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया उन्हीं आदिवासी जनता का प्रमुख पर्व भगोरिया भी रविवार को था संपूर्ण आदिवासी समाज ने अपना खुशी का माहौल रद्द कर श्री जैन के अंतिम संस्कार कार्यक्रम मे भाग लिया। आदिवासियों का श्री जैन के प्रति रूदन देखते नहीं बन रहा था। अपने क्षेत्र में श्री जैन द्वारा कराए गए कार्यों को दोहरा-दोहरा कर ये आदिवासी रो रहे थे।

श्री जैन वर्तमान में भाजपा के जिला महामंत्री थे। राष्ट्रीय स्वयं सेवक, विहिप, वनवासी कल्याण परिषद आदि संस्थानों के प्रमुख कार्यकर्ता थे।

समीरमलजी टांडा के लिए पर्याय बन गए थे। चाहे राजनीतिक कार्य हो या सामाजिक सभी में अग्रणी थे। जैन समाज के वरिष्ठ श्री समीरमलजैन अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के प्रथम कोषाध्यक्ष थे तथा वर्तमान में इस संस्था के प्रमुख सलाहकार थे। वे अ. भा. त्रिस्तुस्तिक जैन समाज के स्तंभों में से एक थे। नव निर्माणधीन श्री राज राजेन्द्र मेमोरियल ट्रस्ट के अध्यक्ष भी थे। आपको पूरे क्षेत्र में दासाब के नाम से जानते थे।

शिक्षामंत्री श्री वर्मा ने कहा कि पिता तुल्य पूज्य दासाब मेरे आदर्श थे। वे इस क्षेत्र की उन्नति के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे। श्री वर्मा ने कहा कि दासाब की मृत्यु के समाचार के कुछ ही समय पूर्व इनके हाथों लिखा पत्र मिला जिसमें लिखा था ताराघाटी सिंचाई योजना मेरे जीवन की आखरी इच्छा है। इस क्षेत्र के लिए ताराघाटी बाँध की मंजूरी दिलाने का कार्य करें, मैं इस आशय का पत्र श्री शीतलासहायजी को लिख ही रहा था कि दासाब की मृत्यु के समाचार मिले।

धीरेन्द्र चौहान ने कहा कि आज हम पहली बार दासाब के बिना दासाब के लिए बोल रहे हैं। रमेश धाड़ीवाल ने कहा मैंने करीब १५ साल पूर्व से अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत दासाब के साथ रहकर की। जब हम किसी बात को लेकर एक ही जाजम पर बैठते थे तो दासाब हममें बुजुर्ग प्रेरणादाता रहते हुए तथा बेटा व नाना कहकर पीठ थप-थपाते थे।

प्रशासकीय क्षेत्र मे वे अत्यंत लोकप्रिय थे। बड़े से बड़े अधिकारी से लगाकर छोटा सा छोटा कर्मचारी आपका सम्मान करता था। आसपास के ग्रामों में बहुत से कर्मचारी आकर अग्नि संस्कार में शामिल होकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। अनेक आदिवासियों ने भी सेठ को श्रद्धांजलि देते हुए पुत्र पारस सेठ को ढाँढस बँधाया। ब्लाक अध्यक्ष डॉ. चीत लाग्या

व कुक्षी, बाग, गंधवानी, राजगढ़, सरदारपुर, धार से भाजपा कार्यकर्ताओं के दलो ने आकर अग्नि संस्कार में भाग लिया व श्रद्धांजलि दी। टांडा से भाजपा के कार्यकर्ता जगन्नाथ, कांतिलाल गादिया, मोतीजी सिर्वी, कालूराम सागरमल सहित अनेक सरकारी कर्मचारियों ने श्रद्धांजली दी।

श्रद्धांजली अर्पित करनेवालों में भाजपा के जिला उपाध्यक्ष रमेश धाड़ीवाल, जयुमो के जिला उपाध्यक्ष जगदीश गुप्ता, ब्लाक भाजपा अध्यक्ष विक्रम रावत, नगर अध्यक्ष गंगाराम पाटीदार, ब्लाक महामंत्री रमेश जमादारी, नगर महामंत्री घीसालाल मालवी, पूनमचंद माली विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष रमेश डूंगरवाल, विजय गुप्ता, राकेश गुप्ता, एडवोकेट पी. के. माहेश्वरी, एडवोकेट हरीश रेवड़िया, कैलाश भावसार, कैलाश मिस्त्रि, लुणकरण गुप्ता आदि अनेक गणमान्य नागरिकों ने श्रद्धांजली अर्पित की।

आचार्य श्री आनंदऋषि जी का देवलोक गमन

अहमदनगर – श्रमण संघीय आचार्य श्री आनंदऋषिजी का ९२ वर्ष की उम्र में देवलोक गमन २८ मार्च को हुआ। उनका दीक्षा पर्याव ७० वर्ष का था। ३० मार्च को अंत्येष्ठि के दिन उनकी पुण्यस्मृति में ७१ लाख रुपये की राशि का ट्रस्ट बनाने की घोषणा श्री पुखराजमलजी एस. लुंकड ने की।

दानशीला श्रीमती झमकुवाई काश्यप का दुःखद निधन

रतलाम – नगर के प्रसिद्ध उद्योगपति अ. भा. श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ एवं अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के वरिष्ठ उपाध्यक्ष – श्री चैतन्यजी काश्यप की दादीजी एवं स्व. सेठ श्री कन्हैयालालजी काश्यप की धर्मपत्नी श्रीमती झमकुबाई का निधन एक अप्रेल को हो गया। आप कुछ समय से अस्वस्थ थीं।

मरणोपरान्त आपके पार्थिव शरीर को मेटाडोर द्वारा स्थानीय बजाजखाना स्थित पैतृक निवास पर लाया गया जहां उपस्थित जनसमुदाय ने पार्थिव देह पर माल्यार्पण किया।

आपकी अन्तिम यात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई त्रिवेणी तट पर पहुंची जहां

आपकी पार्थिव देह को मुखाग्नि आपके पौत्र श्री चैतन्यजी काश्यप द्वारा अर्पित की गई।

दाह संस्कार के पश्चात् नगर के कई गणमान्य लोगों ने श्रीमती झमकुबाई काश्यप को श्रद्धांजली अर्पित की। इस अवसर पर श्री काश्यप ने त्रिवेणी श्मशान गृह पर विश्रामगृह एवं श्रद्धांजली स्थल निर्माण हेतु एक लाख ग्यारह हजार रूपये एवं रतलाम नगर की अन्य संस्थाओं अन्नक्षेत्र, वृद्धाश्रम, गौभूमि, ईश प्रेम बस्ती तथा जीवदया हेतु प्रत्येक में पांच हजार एक सौ रूपये की राशि दान देने की घोषणा की। उच्च चिकित्सा व खाद्यान्न सहायता हेतु पांच लाख रूपये के दान की घोषणा की।

– संक्षिप्त जीवन परिचय –

श्रीमती झमकुबाई काश्यप स्व. सैठ कन्हैयालालजी काश्यप की धर्मपत्नी थी जीवन के प्रारम्भ से ही आप सरल हृदयी व धार्मिक प्रवृत्तियों से ओतप्रोत रही आपने अपने जीवन में अनेक तपस्याऐं की एवं सामाजिक सेवा के क्षेत्र में श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर धर्मशाला निर्माण, श्रीमद् राजेन्द्रसुरीश्वरजी म. सा. की जन्म स्थली भरतपुर (राजस्थान) में राजेन्द्रसूरि कीर्ति मंदिर शिला स्थापना, सागोद तीर्थ पर श्री ऋषभदेव कन्हैयालालजी काश्यप जैन पेढ़ी की स्थापना में आपके सद्प्रयत्न विशेष उल्लेखनीय है।

रतलाम नगर में शिक्षा के अन्तर्गत श्री कन्हैयालाल काश्यप जैन स्कुल भवन, चिकित्सा व मानव कल्याण के क्षेत्र में बाल चिकित्सालय व काश्यप रोटरी नैत्र बैंक की स्थापना में भी आपनें आर्थिक सहयोग प्रदान किया है।

अपने जीवन काल में वे सदैव समाज सेवा के लिये अपने पौत्र श्री चैतन्यकुमार काश्यप को प्रेरणा प्रदान करती रहती थी, हाल ही में श्रीमती झमकुबाई काश्यप नें एक ट्रस्ट स्थापना के माध्यम से अपनें जीवन की सारी राशि ट्रस्ट में प्रदान करनें की घोषणा की थी। आपकी इसी उदारमना प्रवृत्ति से प्रेरित होकर स्थानीय जैन श्री संघ द्वारा आपको ''दानशीला'' की उपाधि से विभूषित कर मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलालजी पटवा के कर कमलों द्वारा अभिनंदन पत्र भेंट किया था।

आपके एक ही पुत्र श्री अशोक कुमार काश्यप का अल्पायु में निधन हो गया था, आप अपनें पीछे चार पुत्रियां एक पौत्र एक पौत्री व दो प्रपौत्र का भरा पुरा परिवार छोड़ गयी है।

साहू श्री श्रेयांसप्रसाद जैन का स्वर्गवास

बम्बई – सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समर्पित समाजसेवी साहू श्री श्रेयांसप्रसादजी जैन का १७ मार्च को प्रातः उनके बम्बई स्थित निवास स्थान शिखरकुंज में ८४ वर्ष उम्र में देहावसान हो गया। वे काफी दिनों से अस्वस्थ थे।

देश के प्रमुख उद्योगपतियों, राजनेताओं, पत्रकारों, साहित्यकारों तथा समाजसेवियों ने उन्हें श्रद्धांजली अर्पित की।

परिषद एवं शाश्वत धर्म परिवार की ओर से
सभी दिवंगत आत्माओं को हार्दिक श्रद्धांजली।

नवप्रकाशित साहित्य

- **चौवीसी (हिन्दी) –** रचयिता – पू. गणिवर्य श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान कांतिप्रकाशन द्वारा – श्री द्वारकादासजी डोसी, चौहटन रोड़ – बाडमेर (राजस्थान) पृष्ठ ३२ मुल्य चार रूपये।

नवरचित वर्तमान चौवीशी के २४ तीर्थंकरों के स्तवनों को प्रकाशित किया गया है।

- **वाचक यश वाणी (हिन्दी) –** रचयिता – उपाध्याय श्री यशोविजयजी म. सा., सम्पादक मुनि श्री जयानंदविजयजी म. सा. प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान – शा. अमीचंद धुड़ाजी भंसाली धानसा – जि. जालोर (राजस्थान) पृष्ठ ७२

उपाध्याय श्री यशोविजयजी म. विरचित सवा सौ, डेढ सौ, साढे तीन सौ गाथाओं के स्तवन व निश्चय व्यवहार गर्भित ढाल व स्तवन का संकलन प्रकाशित किया गया है, जिसमें श्रमण व श्रावकों में व्याप्त शिथिलाचार का विवेचन करते हुए शुद्ध आचार पालन हेतु दर्शाया गया है।

- **संवच्छरी प्रतिक्रमण की सरलविधि (हिन्दी व गुजराती) –** संयोजक सम्पादक – पू. आ. श्री यशोदेवसूरीजी म. सा. प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान मुक्तिकमल जैन मोहनमाला कोठी पोल, बड़ौदा (गुजरात) पृष्ठ १६०, मुल्य – बारह रूपये। (गुजराती में पृष्ठ १८० व मूल्य – इक्कीस रूपये)

- **अन्ययोगव्यवच्छेद् द्वात्रिंशिका –** भावार्थ – विवेचन : साध्वी श्री दिव्यदर्शनाश्रीजी; प्रकाशक : शा. रायचंदजी रतनचंदजी – वागरा (राजस्थान) प्राप्तिस्थान – श्री बागरा जैन संघ मद्रास C/o. नरेन्द्र पोरवाल, ६ विनायगा स्ट्रीट, मद्रास – ६०००७९

- **प्रिय बहनों (हिन्दी) –** लेखिका – सज्जन चौपड़ा, प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान अ. भा. तेरापंथ महिला मंडल – लाडनूं (राजस्थान) पृष्ठ १४९। मुल्य – दस रूपये।

लेखिका ने अ. भा. तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा के नाते विविध सामाजिक विषयों पर मार्गदर्शन करते हुए प्रेरणाप्रद पत्र लिखे उनका संकलन प्रकाशित किया गया है।

- **गुरु–भक्ति गीत (संयमधारा) (हिन्दी) –** रचयिता – भंवरलाल एम. जैन, प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान – श्री ज्ञान प्रचारक मंडल एवं पुस्तकालय C/o. महावीर वॉच कं. वरली, बी. डी. डी. चाल नं. ११३ के सामने शिवराम एस. अमृतवार मार्ग श्रीराम मिल गली – बम्बई – १३। पृष्ठ ८०। मुल्य–सात रूपये

समय–समय पर प्रसंग के अनुरूप एवं विविध गहुंलियॉ आदि गुरूभक्ति गीतों के रूप में प्रकाशित की गयी है। गीतों का आयोजन सुंदर है।

- **बोधिसुमन (हिन्दी)** – प्रवचनकार पू. आचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी म. सा. सम्पादक – मुनिश्री तरूणसागरजी, प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान – बीसाहूमड़ दिगम्बर जैन समाज C/o.श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन नया मन्दिर, प्रतापगढ़ (राजस्थान) जि. चितोड़गढ़। पृष्ठ ४५०, मुल्य–एक सौ एक रूपये।

प्रतापगढ़ चातुर्मास के अंतर्गत दिये गये विविध प्रवचनों का सम्पादन कर संकलन प्रकाशित किया गया है।

- **पद्म परिमल (गुजराती)** – प्रकाशक एवं संग्राहक – हिराचंद लुंबाजी – मुद्रक–कुमार ग्राफिक्स–बम्बई, प्राप्तिस्थान – दिनेश सोहनलाल शाह, १३८–बी, चंदावाड़ी, सी. पी. टेंक रोड़, २ रा माला, रूम नं. ११, बम्बई – ४, फोन ३८८६३२० पृष्ठ १००, मुल्य–सदुपयोग।

विविध विषयों पर उपयोगी संकलनों का सुंदर सेटिंग कर तत्वज्ञान जिज्ञासुओं के लिए अच्छी सामग्री प्रकाशित की है।

- **आंख खुले अंतर खिले (गुजराती)** – प्रकाशक–संग्राहक–मुद्रक–प्राप्तिस्थान सभी उपरोक्तानुसार विविध पुस्तकों से संग्रहित सुवाक्यों का संकलन प्रकाशित किया गया है, जो प्रेरणास्पद एवं वांचन–मनन के योग्य है।

- **श्री शत्रुंजयतीर्थ अभिषेक अने ऋषभदेव (गुजराती)** – लेखक – आचार्य श्री यशोदेवसूरिजी, प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान – श्री मुक्ति कमल जैन मोहनमाला रावपुरा कोठीपोल मंछासदन बड़ौदा (गुजरात)। पृष्ठ ८८, मुल्य–बारह रूपये।

शत्रुंजय तीर्थ विषयक जानकारी, भगवान ऋषभदेव के समय की स्थिती एवं पिछले वर्ष श्री रजनीभाई देवडी आदि महानुभवों द्वारा कराये गये अभिषेक के समय उभरे प्रश्नों का समाधान आदि की विवेचना की गयी है।

- **आहारशुद्धि (गुजराती)** – संकलन, सम्पादन प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान – सुसंस्कार निधि ट्रस्ट C/o.नानजी धारशी ॲण्ड कं. २३८, भात बाजार, १ ला माला, बम्बई–९। पृष्ठ–१४४ मुल्य–आठ रूपये।

सद्विचार और सदाचार की नींव में आहार शुद्धि जरूरी है। जैन दर्शन के अनुसार २२ अभक्ष्यों की चित्रों के साथ जानकारी, फास्टफूड, रात्रिभोजन से नुकसान, विविध डाक्टरों के मंतव्य, दारु, मांस आदि से होनेवाले भयानक रोगों आदि की जानकारी के साथ सुंदर प्रकाशन है। ऐसी पुस्तकें जन हितार्थ खरीद कर बांटनी चाहिये।

नव वर्ष के पंचांग आप निम्न स्थानों से प्राप्त कर सकते हैं –

◆ **उज्जैन** – श्री रमणीकलालजी तलेरा (राजेन्द्र ट्रेडर्स) ◆ **दिल्ली** – श्री उत्तम जैन (आदिनाथ केबल्स) ◆ **विजयवाड़ा** – शा. शेषमल शान्तिलाल ॲण्ड कं. ◆ **आहोर** – मुथा शेषमल कनीरामजी, सराफ पारसमलजी ◆ **नैल्लोर** – श्री शांतिलाल एण्ड सन्स (ज्वेलर्स) ◆ **यादगीरी** – अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन [illegible] परिषद ◆ **मद्रास** – श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, एकाम्ब्रेश्वर अग्राहरम; मीठालालजी हिराणी (एम्. जी. कार्पोरेशन) ◆ **नागदा (जंक्शन)** – श्री बाबुलालजी बोहरा (बोहरा आटो पार्टस्) ◆ **रतलाम** – श्रीमति कांताबहन आंचलिया, शा. लालचंदजी रतनलालजी सुराणा ◆ **मन्दसौर** – श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा (ध्वज कार्यालय) ◆ **जावरा** – श्री शांतिलालजी सुराणा (मधुकर जनरल स्टोर्स) ◆ **पारा** – श्री प्रकाशचन्द्रजी छाजेड़ (छाजेड़ वस्त्रालय) ◆ **दसई** – श्री विमलचंदजी नाहर ◆ **दलौदा** – डॉ. सोहनलालजी सुराणा ◆ **बामनीया** – श्री प्रकाशचन्द्रजी लुणावत ◆ **रानापुर** – श्री ओच्छबलालजी एन. जैन ◆ **जालोर** – श्री जसवंतसिंहजी सोलंकी (मानपुरा कालोनी) ◆ **मांडलवा** – श्री रूपचंदजी पटवारी ◆ **भीनमाल** – श्री देवीचंदजी छगनराजजी ◆ **राजगढ़** – श्री केशरीमलजी वरदीचंदजी तांतेड़ (यतीन्द्र मशीनरी स्टोर्स) श्री मोतीलालजी हरण ◆ **निम्बाहेड़ा** – श्री रतनसिंहजी बलवंतसिंहजी पारेख ◆ **कुशलगढ़** – श्री पारसमलजी कन्हैयालालजी सेठीया (खादी भंडार) ◆ **थलवाड़** – श्री जैन संघ – थलवाड़ ◆ **भरतपुर** – श्री पदमचंदजी प्रभुदयालजी जैन ◆ **सूरत** – पारसमलजी भंडारी, गुरूदर्शन गोपीपुरा ◆ **बम्बई** – रिखबचंदजी गुणेशमलजी भंडारी (भंडारी एक्सपोर्ट, पांजरापोल) ◆ **लोनावला** – श्री पारसमलजी वालचंदजी मुथा ◆ **भीवंडी** – श्री नेमीचंदजी जैन (चम्पालाल ॲण्ड ब्रदर्स) ◆ **जोगेश्वरी** – श्री मोहनलालजी जैन (दिपक टेक्सटाईल्स) ◆ **नीमच** – श्री पारसमलजी एच. सेठिया (अध्यापक) ◆ **महिद्पुर** – श्री नरेन्द्रकुमारजी धाड़ीवाल (पत्रकार) ◆ **मेघनगर** – श्री तेजमलजी जैन (अध्यापक) ◆ **बड़नगर** – श्री शांतिलालजी गोखरू ◆ **भाटपचलाना** – श्री शांतिलालजी गीरिया ◆ **आलोट** – श्री मोतिलालजी धाडीवाल ◆ **टाण्डा** – श्री अशोककुमार श्रीश्रीमाल (अरिहंत मेडिकल स्टोर्स) ◆ **कानपुर** – श्री कन्हैयालालजी बांठिया (आचार्यनगर) ◆ **बाग** – श्री अमृतलालजी एम. जैन ◆ **कुक्षी** – श्री मणीलालजी पौराणिक (मनोहर वस्तु भंडार) ◆ **खाचरोद** – श्रीमती कोकिला भारतीय ◆ **इन्दौर** – श्री सुरेशचन्द्र जैन (एम. टी. क्लॉथ मार्केट) ◆ **सायला** – श्री अचलचंदजी जैन ◆ **मदनगंज किशनगढ़** – शा. राजमल ज्ञानचंद कर्नावट ◆ **बालोतरा** – श्री गौतमचंदजी वागेरचा (नाकोड़ा पेकवेल) ◆ **जोधपुर** – श्री विद्यार्थी चंद भंडारी ◆ **पेद्दापुरम्** – श्री अम्बालालजी इन्दरमलजी जैन ◆ **कराड़** – श्री सोहनराजजी जैन (लालचंद चुनीलाल ॲण्ड कं.) ◆ **कलकत्ता** – भानमलजी जैन ◆ **बैंगलोर** – देवकुमार के. जैन (श्री अरिहंत जैन प्राणि कल्याण संस्था) ◆ **काकीनाड़ा** – श्री घीसुलालजी जैन ◆ **गुन्टुर** – श्री मांगीलालजी टी. जैन ◆ **झाबुआ** – पन्नालालजी जैन सेठीया ◆ **सांधू** – श्री जैन संघ ◆ **बम्बई** – दुदमलजी मांडोत मंगल आर्ट ◆ **पुणे** – श्री चन्दनमलजी जैन (चन्दन ज्वेलर्स) ◆ **पांथेड़ी** – जावन्तराजजी शाहजी ◆ **रेवतड़ा** – श्री जैन संघ ◆ **बागरा** – श्री जैन संघ ◆ **नरता** – श्री ओटमलजी जैन।

लिजिए राजेन्द्र नाम – पाईए प्रथम इनाम

'रा' अक्षर का स्वाध्यायचिन्तनात्मक पत्राचार प्रश्नावली पत्र

श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरूदेव की जयंती के पावन प्रसंग पर प. पू. साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से साध्वीद्वय डॉ. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी एवं साध्वी डॉ. श्री सुदर्शनाश्रीजी म. सा. के द्वारा संयोजित 'रा' अक्षर पर प्रश्नावली पत्र प्रकाशित किया गया है। इससे युवा पीढ़ी को सम्यक्ज्ञान के क्षेत्र में कुछ आलोक अवश्य मिलेगा।

विजेताओं को ५१००/– पांच हजार एक सौ रूपये के पुरस्कार वितरित किये जाएंगे।

(प्रथम पुरस्कार २५००/– रूपये, द्वितीय पुरस्कार १५००/– रूपये एवं तृतीय पुरस्कार ११०१/– रूपये)

प्रश्नावली पत्र भरकर भेजने की अन्तिम तिथि – १५–५–१९९२

प्रश्नावली पत्र मंगवाने एवं भरकर भेजने का पता :–

"पत्राचार स्वाध्यायी प्रश्नावली पत्र स्पर्धा"

१) श्री कानराजजी कालुराजजी मेहता
सूरजपोल **जालोर**
(राजस्थान – ३४३ ००१)

२) श्री पृथ्वीराजजी कावेड़ीया
द्वारा : अल्का सेल्स कार्पोरेशन, स्टेशन रोड़,
भीनमाल, (राजस्थान – ३४३ ०२९)

निवेदन – लेखकों, प्रकाशकों एवं पाठकों से

समय परिवर्तनशील है। समय–समय पर उत्पन्न परिस्थितियों के अनुसार मूल स्वरूप को कायम रखकर जो समय के साथ चल सका है, वही अपनी अस्मिता को जीवित रख सका है। अनादि काल से जैन धर्म के सिद्धान्त इस कसौटी पर खरे उतरे हैं, इसलिए वह सदा कालजयी रहा है। बदलती परिस्थितियों के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 'श्रावकाचार' पर भी सांगोपांग अध्ययन आवश्यक है। 'पर्वप्रज्ञा' के छठे पुष्पांक में इस वर्ष सन १९९२ का अंक 'श्रावकाचार' के विभिन्न पहलूओं पर प्रकाशित करने का निर्णय लिया है।

सभी लेखकों से निवेदन है कि आगमोक्त श्रावकाचार एवं समायोजित श्रावकाचार – इन दो विभागों में प्रकाश्य अंक हेतु अपनी मौलिक अप्रकाशित एवं शोधपूर्ण रचनायें गुजराती/हिन्दी/अंग्रेजी में (मर्यादा २००० शब्द) निम्नांकित पते पर प्रकाशनार्थ भिजवायें।

प्रकाशकों एवं स्वाध्यायायियों से निवेदन है कि श्रावकाचार संबंधी प्रकाशित साहित्य की पूरी जानकारी भिजवायें ताकि उनका संकलन प्रकाश्य अंक में हो सके।

जिज्ञासु पाठकों से निवेदन है कि अपनी प्रति सुरक्षित करने हेतु अग्रीम बुकिंग के लिये सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र – श्रीमती गीता जैन (सम्पादिका), न्यू पब्लिकेशन्स, १२ हीरा भुवन, वी. पी. रोड, मुलुण्ड (वेस्ट) – बम्बई – ४०० ०८०

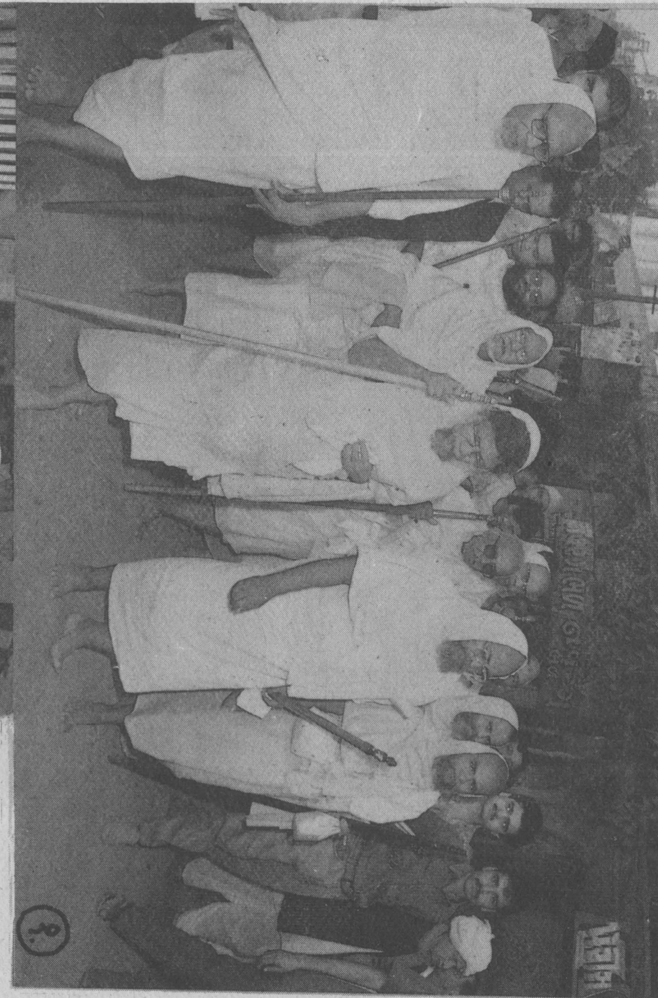

1. नवाणु यात्रा में निश्रा प्रदान करने हेतु आचार्यश्री जयन्तसेन-सूरिजी का पालीतणा में पदार्पण, साथ में आचार्य-श्री यशोदेवसूरिजी.

2. यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला में पेढी का उद्घाटन करते हुए अदाणी गगलदास नागरदास थराद निवासी.

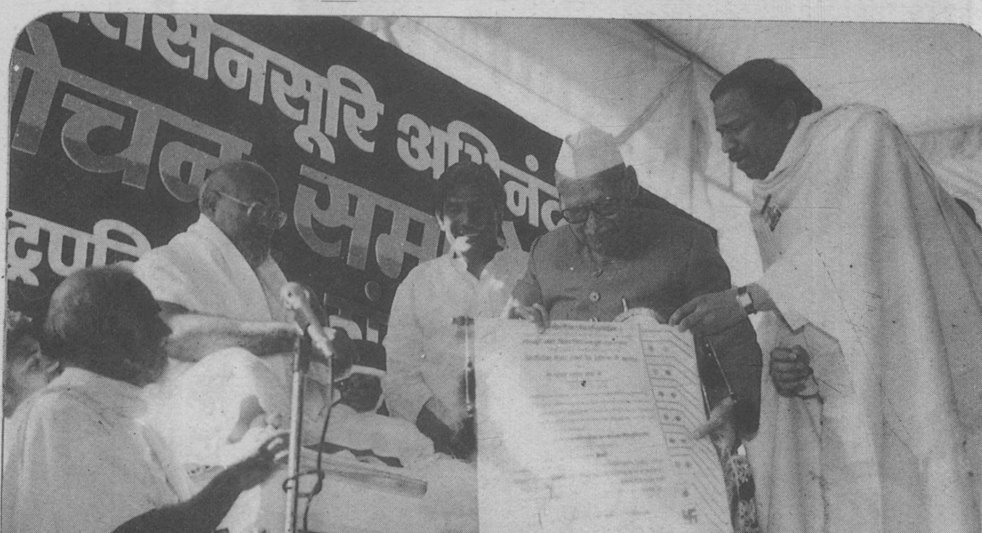

उपराष्ट्रपतिजी द्वारा जैनाचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी को अभिनन्दन ग्रंथ
अर्पण एवं राष्ट्रसंत की उपाधि से सम्मानित किये जाने के दृश्य
(विवरण- शाश्वत धर्म के जनवरी ९२ के अंक में पृष्ठ ३५ व ३६ पर)

श्रीमद्
विजयजयंतसेनसूरि
अभिनन्दन ग्रंथ विमोचन
एवं राष्ट्रसंत प्रशस्तिपत्र
समर्पण कार्यक्रम
दि. ८ दिसम्बर १९९१
स्थान - जावरा (म.प्र.)

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद
उद्देश्य
समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रचार,
समाज सुधार, आर्थिक विकास.

१. नवाणु यात्रा आयोजक चुनीलाल नागरदास परिवार (थराद निवासी) आचार्य श्री की प्रवेश यात्रा के समय.

२. यतीन्द्रभवन धर्मशाला में गुरुदेव के फोटो को माल्यार्पण थराद निवासी श्री कांतिलाल अम्रलखभाई भणसाली द्वारा.

સમત્વ : સાધનાનો રાજપથ

મુનિશ્રી અમરેન્દ્રવિજયજી

('આત્મજ્ઞાન અને સાધનાપથ' તેમ જ 'આપણે આત્મનિરીક્ષણ કરીશું?' જેવાં સુંદર પુસ્તકો આપનાર, ઉત્તમ સાધક એવા મુનિ શ્રી અમરેન્દ્રવિજયજી દ્વારા રચિત "સાધનાનું હૃદય" હાલમાં જ અવગાહવાનું બન્યું. સાધક માટે આ પુસ્તિકા સાચે જ ઘણી સહાયક થઈ શકે તેમ છે. આ પુસ્તિકા ખરેખર ખૂબ સરસ છે અને તેથી આપણા વાચકો પણ તેનો થોડોક રસાસ્વાદ લઈ શકે તે માટે તેમાંથી એક પ્રકરણ અત્રે પ્રસ્તુત કર્યું છે.-**સંપાદક**)

જ્ઞાન અને ક્રિયા, વિચાર અને વર્તન, નિશ્ચય અને વ્યવહાર-એ બે ચક્રો ઉપર સાધનાનો રથ આગળ સરકે છે. નિર્મળ અંત:કરણવાળા વ્યક્તિઓ પોતાની આંતરસૂઝના બળે એ બેને યથાયોગ્ય મહત્ત્વ આપી ઉત્તરોત્તર અધિક આત્મવિકાસ સાધે છે. પણ ઘણી વાર એવું જોવા મળે છે કે, મોક્ષમાર્ગના પથિકો પણ એ બેની સમતુલા જાળવવાનો વિવેક દાખવી શકતા નથી, અને વિચાર કે વર્તન - જ્ઞાન કે ક્રિયા - માંથી કોઈ એકના જ પક્ષકાર બની રહે છે. પરિણામે, તેમની સાધનાનો રથ કદાચ ગતિ કરતો રહે તોયે પંથ કપાતો નથી-મુક્તિપંથે એની પ્રગતિ થંભી જાય છે. આ ભયસ્થાનને હેમખેમ પાર કરવા મુમુક્ષુએ સમત્વની ખિલવટને પોતાની આરાધનાનું કેન્દ્ર બનાવવું રહ્યું.

કોઈ વ્યક્તિના જીવનમાં ખરેખર ધર્મ આવ્યો છે કે નહિ તેની આ સાચી પરખ છે જીવનની અનુકૂળ-પ્રતિકૂળ પરિસ્થિતિઓમાં તેનું અંતર આકુળ-ઉદ્વિગ્ન બની જાય છે કે નિરાકુળ રહે છે સમ રહે છે કે વિષમ બની જાય છે? જ્યાં સમતા છે, નિરાકુળતા છે, અનુદ્વિગ્નતા છે ત્યાં ધર્મ છે જ્યાં આકુળતા છે, ઉદ્વિકતા છે ત્યાં અધર્મ છે - વિભાવ છે. ધર્મનો આ સાચો માપદંડ છે કે વ્યક્તિ સમતામાં કેટલો પ્રતિષ્ઠિત છે - નહિ કે ધર્મશાસ્ત્રોની કે નિશ્ચયનયની વાતોનો તે કેટલી પોપટપાઠ કરી શકે છે, કે કેટલાં પૂજા-સામાયિક-પ્રતિક્રમણાદિ અનુષ્ઠાનો તે કરે છે કે કેટલાં વ્રત-નિયમ તેણે ધારણ કર્યા છે. દર્શનશાસ્ત્રોની કે નિશ્ચયની વાતોનું રટણ, અનુષ્ઠાનો અને વ્રત-નિયમની પ્રવૃત્તિ એ બધું આભારિક પણ હોઈ શકે.

સમત્વસાધનાની ત્રણ આધારશિલાઓ

સમત્વના વિકાસ અર્થે વૈરાગ્ય, વિશ્વપ્રેમ અને જ્ઞાનનો ત્રિપાંકિયો વ્યૂહ અપેક્ષિત છે. ચિત્ત ભોગોથી વિરક્ત, જીવનસૃષ્ટિ પ્રત્યે આત્મતુલ્ય દૃષ્ટિમાંથી જન્મતી સહાનુભૂતિવાળું અને જ્ઞાનથી વાસિત હોય તો સમત્વ સુલભ બને છે. 'જ્ઞાન'થી અહીં જગતના ભાવોની ક્ષણભંગુરતાનું ભાન અને પોતાના નૈશ્ચયિક શુદ્ધ. શાશ્વત સ્વરૂપની પ્રતીતિઅપરોક્ષ

અનુભવ પૂર્વે શ્રુતથી લભ્ય પ્રતીતિ અપેક્ષિત છે. આ ત્રણેયનો સુભગ સંયોગ થતાં સમત્વ સ્થિર બને.

નિયંત્રિત ભોગ-ઉપભોગ

ભોગોમાં જે અત્યંત આસક્ત હોય તે સમતા કે ચિત્તા શાંતિ મેળવી શકે નહિ. ભોગની કામનાથી તેનું ચિત્ત સદા ક્ષુબ્ધ જ રહેવાનું. તેથી દેહને સાધનાક્ષમ રાખવા માટે અને જીવનયત્રાના નિર્વાહ અર્થે આવશ્યક હોય તેથી અધિક ભોગઉપભોગ સાધક ટાળે એ ઈચ્છનીય છે. પ્રત્યેક ભોગપ્રવૃત્તિ (કે એનો વિચાર સુધ્ધાં) ચિત્તમાં તેનો સંસ્કાર મૂકતી જાય છે, જેના પરિણામે એ ભોગોમાં પ્રવૃત્ત થવાની ફરી ફરી ઈચ્છા જાગે છે. જેમ કોઈ મુસાફર ધારેલી જગ્યાએ પહોંચે નહિ ત્યાં સુધી માર્ગની અગવડો તથા મુસાફરીનો શ્રમ અનુભવે છે અને તેથી અશાંત રહે છે, તેમ મનમાં ઊઠેલી એક ઈચ્છા પૂરી ન થાય ત્યાં સુધી મન અશાંત રહે છે ને વિક્ષેપનો અનુભવ કરે છે. અનિયંત્રિત ભોગેચ્છાને સંતોષવા જરૂરી સાધનસામગ્રી મેળવતાં, સાચવતાં અને ભોગવતાં ચિત્તમાં ચિંતા, અજંપો અને સંક્લેશનાં જાળાં બધાય છે, અને એ નિમિત્તે બીજા જીવો સાથે સંઘર્ષના પ્રસંગો ઉપસ્થિત થતાં પણ વાર લાગતી નથી. તેથી સમત્વ અને ચિત્તશાંતિના અર્થીએ ભોગપ્રવૃત્તિને નિયંત્રિત કરી તેની કામનાને ઘટાડવી રહી આ હેતુથી સર્વ કાળના જ્ઞાનીઓએ મુક્તિમાર્ગના પ્રવાસીને પ્રારંભમાં જ પોતાનું જીવન યમનિયમ દ્વારા ઘડવાનો અનુરોધ કર્યો છે.

આત્મીયતા

પોતાનું જીવન યમનિયમથી સંયમિત હોવા છતાં જો બીજાઓના પોતાથી જુદા પડતા વિચારો, ક્ષતિઓ, દોષો અને અપરાધ સુધ્ધાંને શાંતભાવે સહી લેવાની શક્તિ કેળવાઈ ન હોય તોયે ચિત્તને ડહોળાતાં વાર લાગતી નથી. તેથી ક્ષમાની કેળવણીને પણ સાધક જીવનમાં અતિ મહત્ત્વનું સ્થાન અપાયું છે.

મુનિના બીજા બધા ગુણોને ગૌણ કરીને, પ્રત્યેક વાર 'ક્ષમાશ્રમણ' વિશેષણને જ આગળ કરીને, મુનિને વંદન કરવાની પાછળ હેતુ શો છે? તે એ જ સૂચવે છે કે ક્ષમા એ મુનિની સહજ વૃત્તિ બનવી જોઈએ. આ કારણે ઉપશમને સાધુપણાનો સાર કહ્યો છે. ઉપશમ એટલે 'અપરાધીસુ પણ ચિત્ત થકી, નવિ ચિંતવીએ પ્રતિકૂળ' બૂરું કરનારનું પણ મન, વચન, કાયાથી અહિત ન ચિંતવવું, હિત જ ચિંતવવું. એ ક્યારે બને? વ્યક્તિએ જેને પોતાનાં માન્યાં હોય છે તેની પ્રત્યે આવું વલણ સહજ હોય છે. જેની સાથે આપણે આત્મીયતા અનુભવીએ છીએ તેના પ્રત્યે ઉદારતા, ક્ષમા અને સહિષ્ણુતા વિના પ્રયાસે આવે છે. આથી મુક્તિમાર્ગના પ્રવાસીએ સમગ્ર જગતનાં પ્રાણીઓ પ્રત્યે આત્મીયતાનો ભાવ વિકસાવવો કે આત્મતુલ્યવૃતિ કેળવવી આવશ્યક છે. પોતાના સંપર્કમાં આવતા જીવોમાં વિલસી રહેલ ચૈતન્ય-અંશને જ જોવાની દૃષ્ટિ કેળવાઈ હોય તો આ સુલભ બને.

ઉપાધ્યાયજી યશોવિજયજી મહારાજે આ તથ્યને વાચા આપતાં કહ્યું છે કે 'શુદ્ધ

નયમાં સ્થિત થઈને જે સાધક, જગતના જીવોમાં રહેલ કર્મકૃત વિષમતાને બાજુએ મૂકીને એમનામાં વિલસી રહેલ ચૈતન્યને જ જુએ છે (અને એ રીતે જગતને નિજાત્માથી અભિન્ન જુએ છે) તેનું સમત્વ અખંડ બને છે.' જગતના જીવોમાં રહેલ ચૈતન્ય-અંશને જ જોવાની દૃષ્ટિ ખૂલતાં, જગતમાં બનતી ચિત્રવિચિત્ર ઘટનાઓથી કે પોતાના સંપર્કમાં આવતી વ્યક્તિઓની ગમે તેવી વિલક્ષણ વૃત્તિ-પ્રવૃત્તિથી, સાધકના ચિત્તમાં ક્ષોભ ઉત્પન્ન થતી નથી, તેની સમતા ડહોળાતી નથી.

સ્વરૂપ-સ્મૃતિ યાને નિશ્ચયદૃષ્ટિ

સમત્વનો ત્રીજો આધારસ્તંભ છે જ્ઞાન-આનંદમય પોતાના નૈશ્ચયિક શુદ્ધ સ્વરૂપનું જાગૃત ભાન. આપણાં બધાં દુ:ખદર્દનું મૂળ દેહાત્મબુદ્ધિમાં રહેલું છે. જ્યાં સુધી આપણે આપણી સાચી ઓળખાણ મેળવી ન લઈએ ત્યાં સુધી તૃષ્ણા નિર્મૂળ થઈ શકતી નથી. ફલત: ભય-લોભ-અસંતોષ આદિ વિકારોથી ચિત્ત ગ્રસ્ત રહે છે અને સમતા લાધતી નથી.

ભોગોપભોગ અતિ નિયંત્રિત હોય અને અન્યની સારીમાઠી પ્રવૃત્તિ પ્રત્યે ઉદાસીનતા પણ કેળવાઈ હોય, તે છતાં, અનિશ્ચિત ભાવિની ભીતિ ચિત્તમાંથી હઠી નહિં હોય તો, ભાવિનો વિચાર ચિત્તને ક્ષુબ્ધ રાખશે. અનિષ્ટ ભાવિની એ આશંકા પોતાના શાશ્વત શુદ્ધ સ્વરૂપ સાથેના અનુસંધાન દ્વારા જ નિર્મૂળ કરી શકાય છે. નિજના શુદ્ધ ચૈતન્ય તરફ દૃષ્ટિ ગઈ જ નહિ અને દેહમાં જ 'હું'-બુદ્ધિ રહી તો પ્રાપ્ત 'સુખ' હાથમાંથી સરી જવાની કે કશુંક અમંગળ થવાની ધાસ્તી હંમેશા રહેશે - અનિશ્ચિત ભાવિની ભીતિ ચિત્ત ઉપર સવાર થઈ બેસશે.

શુદ્ધમાન અને આનંદ એ જ આપણું સાચું સ્વરૂપ છે. અત્યારનું આપણું સમગ્ર વ્યક્તિત્વ ભવનાટકના સ્ટેજ પર કર્મના નિદર્શન મુજબનો ક્ષણવાર પૂરતો આપણો એક અભિનય માત્ર છે. આ દુનિયાના મંચ ઉપર વિશ્વવિખ્યાત ઉદ્યોગપતિ કે અનામી ખેતમજૂર, ખ્યાતનામ સાક્ષર કે નિરક્ષર ગામડિયા, પાંચમાં પુછાતા ફિલસૂફ કે પાગલ, ન્યાયાધીશ કે આરોપી, રાષ્ટ્રપતિ કે આજીવન કેદી, વિશાળ અનુયાયીવૃંદથી સેવાતા સંત કે સર્વત્ર હડધૂત થતા હિપ્પી વેશમાં થોડો કાલ ઝબકી જઈ કાળના પ્રવાહમાં આપણે વિલીન થઈ જઈશું. જેમ સ્વપ્નની ઘટનાઓનો આપણા જીવન ઉપર કશો પ્રભાવ નથી તેમ એ સર્વ પ્રાપ્તિઓ કે અભાવોથી આત્માને ન કશો લાભ છે કે નું કશું નુકસાન ચલચિત્રના પડદા ઉપર જેમ ચિત્રવિચિત્ર અનેક પ્રકારનાં ચિત્રો ક્ષણભર ઝબકી જાય છે, પરંતુ એની કોઈ અસર પડદાને નથી થતી - ચિત્રો પલટાતાં જાય પર પડદો તો એકસરખો રહે છે; તેમ આપણાં મન-વાણી-કાયાના પર્યાયો કાળના પ્રવાહ સાથે ક્રમશ: દેખા દઈ નિલીન થઈ જાય છે. જ્યારે એને નીરખનાર ચેતના, પડદાની જેમ, એ પ્રવાહથી અસ્પૃષ્ટ છે. એ શાશ્વત સત્તા છે. મન-વાણી-કાયાના પલટાતા દશ્ય પર્યાયો સાતે નહિ પણ નિજના આ અદૃષ્ટ શાશ્વત સ્વરૂપ સાથે તાદાત્મ્ય અનુભવીને જ આપણે રતિ-અરતિ રાગદ્વેષ, વિકારો-વાસનાઓ અને માયા-મમતાની પકડમાંથી મુક્ત તઈ શકીશું.

કિંતુ આપણે રૂપ ઉપર જ આપરું ધ્યાન કેન્દ્રિત રાખીએ છીએ ને સ્વરૂપને વીસરી જઈએ છીએ. જે રૂપ ઉપર આપણે મોહ પામીએ છીએ તે તો પુદ્ગલનો જ એક વિકાર હોવાથી નાશવંત છે. એટલે રૂપ જે રૂપાંતર પામે છે તેના ઉપરથી દૃષ્ટિ ખસેડી લઈ, સ્વરૂપ કે જે શાશ્વત અચલ તત્ત્વ છે તેનું અનુસંધાન કરીશું તો જ ચિત્તમાં સમત્વનું અવતરણ થઈ શકશે.

પૂર્વબદ્ધ કર્મના ફળસ્વરૂપ આપત્તિઓ, મર્યાદાઓ, બાધાઓ, અડચણો અને કષ્ટદાયી સંયોગો તો હર કોઈના જીવનમાં આવે છે, પણ તે અવસરે એ બધાંની અસરથી પર એવા પોતાના અવિકારી શુદ્ધ શાશ્વત સ્વરૂપનું સ્મરણ સાધકને એમાંથી જન્મતા ચિત્તવિક્ષોભ, દૈન્યભાવ અને સંભવિત આર્તધ્યાનમાં અટવાતાં ઉગારી શકે છે. જ્યાં સુધી માણસ દેહ અને દેહથી સંબંધિત પ્રાણી, પદાર્થ કે પરિસ્થિતિને સ્થિર રાખવા મથે છે, ત્યાં સુધી તેમાં આવતું કો, પરિવર્તન કે તેવા કોઈ પણ ફેરફારની સંભાવના માત્ર તેને બેચેન બનાવી મૂકશે. પરંતુ પુદ્ગલકૃત સર્વ સંયોગાસર્વ ઔદયિક ભાવો, પદાર્થ કે પરિસ્થિતિની ક્ષણિકતાનું ભાન તેમ જ પોતા નાં સુખસલામી-અસ્તિત્વ બાહ્ય વસ્તુ, વ્યક્તિ કે પરિસ્થિતિથી નિરપે છે, એ સમજણ અને વિશ્વાસ જેના ચિત્તમાં સ્થિર થયાં હશે, તે બાહ્ય જગતમાં થતી ગમે તેવી ઊથલપાથલોથી કે ગમે તેવા પ્રતિકૂળ વળાંક લેતી પોતાની બાહ્ય પરિસ્થિતિમાં પણ સંકલ્પગ્રસ્ત નહિ બને.

આમ, સમતાના વિકાસ, પોષણ અને સ્થિરતા માટે ઉપર્યુક્ત ત્રણે અંગો આવશ્યક છે; અને એ ત્રણે પરસ્પર સંકળાયેલાં છે:

૧. સંયમમય જીવન તથા જગત સાથે પ્રેમ અને સહાનુભૂતિવાળો જીવનવ્યવહાર હોય ત્યાં સ્વરૂપજાગૃતિ ટકી શકે છે.

૨. નિજના શુદ્ધ ચૈતન્ય સ્વરૂપની સભાનતાવાળી વ્યક્તિ અન્ય દેહધારીઓમાં પણ, તેમના દેહની ઓથે વિલસી રહેલ, ચૈતન્ય અંશને જોઈ શકે છે; શુદ્ધ ચૈતન્યની દૃષ્ટિથી જીવસૃષ્ટિને નિહાળનાર સહજભાવે તેના પ્રત્યે આત્મસમ દડષ્ટિ અને સહાનુભૂતિ રાખી શકે છે.

૩. આત્મસ્વરૂપના જ્ઞાનથી વાસિત તથા જીવસૃષ્ટિ પ્રત્યે પ્રેમ, કરુણા અને સહાનુભૂતિસભર એવા ચિત્તની ભોગપ્રવૃત્તિ, પોતાના બાળકનાં હિત-સુખ આપોઆપ નિયંત્રિત રહે છે. જ્યાં એ બે-આત્મસ્વરૂપનું જ્ઞાન અને જીવનસૃષ્ટિ સાથે આત્મીયતા-નો અભાવ હોય ત્યાં જીવનમાં સ્વયંસ્ફૂર્ત સંયમ નથી આવતો પરંતુ બહારથી ઓઢી લીધેલા વિધિ નિષેધને પકડી રાખવાની મથામણ કરવી પડે છે તેમાંથી વખતે દંભ પણ પ્રવેશે છે.

આમ, વૈરાગ્ય, વિશ્વપ્રેમ અને જ્ઞાન એ ત્રણને પરસ્પર સંબંધ હોવાથી, એ ત્રણેનો સંયુક્ત પ્રયોગ થાય તો સમત્વ ખીલી ઊઠે ને જીવન સ્વસ્થ અને પ્રસન્ન બની રહે.
('સાધનાનું હૃદય")

માણસ માત્ર ભૂલને પાત્ર

શ્રી લઘુગોવિન્દ

હરીલાલભાઈ સુરેશ શેઠની પેઢીમાં કામ કરે. વ્યવહારમાં ચોકખા ને મહેનતુ માણસ. હિસાબ પણ વ્યવસ્થિત રાખે. કયાંય ભૂલ ન થાય, પણ કર્મ સંજોગે એક દિવસ હિસાબમાં ભૂલ થઈ ગઈ. ને સો રૂપિયા ઓછા આવ્યા. સાંજે સુરેશ શેઠને ખબર પડી, એટલે હરીલાલ ભાઈને થોડો ઠપકો આપ્યો.

સ્વમાની માણસ હતા એ, એટલે આ ઠપકો એમને જરા આકરો લાગ્યો. મનમાં વિચારે છે, 'અઠવાડિયા પહેલાં શેઠે દસ હજારની મોટી ભૂલ કરેલી ત્યારે મેં જ તે ભૂલ બતાવીને દસ હજારનું નુકસાન થતું બચાવ્યું હતું અને આજે સો રૂપિયા માટે મન કડવા વેણ કહ્યા. 'માણસ માત્ર ને ભૂલને પાત્ર.' એટલું પણ સમજવા એ તૈયાર નથી. આમ એ આર્ત ધ્યાનમાં રમતા રહ્યા. દૂધને જો ઉકાળો તો એ ઉભરાય, પણ ઉભરાતું અટકાવો પછી જેમ જેમ એને ઉકાળો તેમ તેમ એ ઘટ્ટ થતું જાય. એ જ રીતે હરીભાઈ શેઠ સામે તો ગુસ્સો ન કરી શક્યા, પણ એ ગુસ્સો મનમાં ને મનમાં ઘુંટાતો રહ્યો. ગુસ્સો દિલડામાં ઘટ કરી ગયો, મન ઉદાસ ને ઉગ્ર બની ગયું.

ઘરે આવી એ જમવા બેઠા. ત્યાં એમના પત્ની વિમળાબેન બોલ્યા, 'હરેશનું ઘડિયાળ બગડી ગયું છે. કાલે જતાં જતાં રીપેર કરવા લઈ જજો' એ બોલ્યા. 'હમણાં તો નવું લાવેલું ને કેમ બગડી ગયું?' પત્ની બોલ્યા, 'ચાવીના આંટા વધારે આપવાથી ગડબડ થઈ ગઈ.' એટલે એમણે હરેશને બોલાવ્યો ને પૂછ્યું, 'ઘડિયાળ કેમ બગડી ગયું?' હરેશ ડરતાં ડરતાં બોલ્યો, 'આવી જરા વધારે અપાઈ ગઈ.'

દિલમાં ગુસ્સો તો ઘુંટાતો જ હતો. હવે પ્રગટ કરવાનો અવસર મળી ગયો. અને એમણે હરેશ પર ગુસ્સો ઉતાર્યો. હરેશના ગાલ પર તમાચો ચોંટી દીધો. ને બોલ્યા. 'ઘડિયાળ વાપરતાં તો આવડતું નથી ને જોઈએ ઘડિયાળ. 'પાડાના વાંકે પખાળીને ડામ' દેવામાં દિલડાનાં આર્ત ધ્યાને રૌદ્ર ધ્યાનનું રૂપ લીધું.

હરેશ બિચારો રડીને સૂઈ ગયો. વિમળાબેન સમજુ ને ઠરેલ નારી હતા. ચુપચાપ પતિને ઠંડુ પાણી પીવડાવ્યું. ને પોતાના કામે લાગી ગયા.

રાત્રે હરિલાલભાઈ પથારીમાં પડ્યા, પણ ઉંઘ વેરણ બની ગઈ. સુરેશ શેઠના વેણ એમના દિલડાને કાંટાની જેમ ભોંકવા લાગ્યા. મન-ગગનમાં વિચારોના પંખી ઉડવા લાગ્યા. ત્યાંજ એમના દિલમાં વિચારની એક લકીર વિજળી સમ ઝબુકી. ને મન-મંદિરીયે પ્રકાશ પાથરી ગઈ. સુરેશ શેઠ જ્યારે મને ઠપકો આપે છે, ત્યારે હું વિચારૂં છું કે એ એટલું ય સમજી શકતા નથી કે 'માણસ માત્ર ભૂલને પાત્ર'. આવી બાત બધાએ સહેજમાં સમજી જવી જોઈએ એમ માનતો હું હરેશની ભૂલ વખતે કેમ ભૂલી ગયો? મારી ભૂલ થાય તો સામી વ્યક્તિએ 'માણસ માત્ર ભૂલને પાત્ર' સમજીને ક્ષમા આપવી જોઈએ, પણ અન્યની ભૂલ થાય ત્યારે હું સૂત્ર ભૂલીને સામાને ક્ષમા ન કરતાં, શિક્ષા કરૂં-એ વળી ક્યાંનો ન્યાય?

આ સત્યના પ્રકાશથી એમનો ગુસ્સો અંધારાની જેમ જ પીગળી ગયો. હવે પોતાના

પ્રિય પુત્રને મારવા માટે એમને અફસોસ થયો.

એ પથારીમાંથી ઉઠ્યા ઠંડુ પાણી પીધું ને પુત્રની પથારી પાસે જઇ, જ્યાં તમાચો માર્યો હતો એ ગાલને પંપાળીને પાછા ફર્યા. બીજા દિવસે સવારે એમણે પોતાના પુત્ર ને ક્ષમા માગી. મારવામાં પોતે ઉતાવળીયું પગલું ભરી લીધું તે માટે પશ્ચાતાપ કર્યો. તે ચહાપાણી પતાવી ઓફિસે જવા નિકળ્યા, ત્યારે પુત્રની ઘડિયાળ લેવાનું ન ભુલ્યા.

માનવી પોતાની ભુલ માટે ક્ષમા માગે ને બીજાની ભુલ થાય તો ક્રોધે ભરાય ને મારે એ તો ૩૬ના આંકડા જેવી વાત છે. એને પલ્ટાવીને ૬૩નો આંકડો બનાવીએ. અર્થાત : પોતાની ભુલ માટે શિક્ષા ભોગવવા તૈયાર રહો, પણ અન્યની ભુલને ઉદાર દીલે ક્ષમા આપી દો. આર્ત ધ્યાનને રૌદ્ર ધ્યાનતી દુર રહો. ધર્મ ધ્યાનમય બનો તો નવા કર્મો બંધાતા અટકશે ને જુના કર્મો ખરી પડશે આતમ હળવો બનશે. સર્વત્ર પ્રેમ ને સુખ શાંતિનું સામ્રાજ્ય ફેલાઈ જશે.

प.पू.आचार्यदेव श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में संघवी केसरीमलजी, रुपचंदजी, चांदमलजी, राजमलजी पोसीत्रा परिवार की ओर से बाग (म.प्र.) में उपधान तप का मंगल आयोजन हुआ। समापन अवसर पर संघवी परिवार का अभिनंदनपत्र, हार एवं तिलक द्वारा अभिवादन किया गया। (प्रस्तुत चित्र में संघवी परिवार व मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश शासन के उद्योगमंत्री श्री कैलाश जोषी दृष्टिगोचर हो रहे हैं। (समाचार-शाश्वत धर्म के फरवरी व मार्च अंक में आप पढ़ चुके हैं।)

श्री राजेन्द्र वचनामृत

समय या लोकमत की अहेलना करता है, वह किसी का भी प्रेम सम्पादित नहीं कर पाता। संसार में वैराग्य ही ऐसा है, जिसमें न किसी का भय है न चिन्ता; अत: निर्भय वैराग्य-मार्ग का आचरण ही सर्वदा सुखप्रद है।

जो असंयम को दूर कर देते है और फिर कभी उसके फन्दे में नहीं फँसते, वे संयम में आरुढ रह कर अक्षय सुख को प्राप्त करते हैं; इतना ही नहीं , उनके सहारे अन्यों को भी आत्मविकास का अवसर मिलता है।

सयंम कल्पवृक्ष है, तपस्या उसकी सुदृढ़ जड़ है, सन्तोष स्कन्ध है, इन्द्रिय-सयंम शाखा-प्रशाखा है, अभय पर्ण है, शील पत्रोद्‌ग है। यह श्रद्धा के जल से सिंचकर सदैव नयी कोंपलें धारण करता रहता है। ऐश्वर्य इसका पुष्प है और मोक्ष फल। जो इसकी भली-भाँति अप्रमत्तभाव से रक्षा करता है, उसके दुःखों का सदा के लिए अन्त हो जाता है।

जैसे वटवृक्ष का बीज छोटा होते हुए भी उससे बड़ा आकार पाने वाला अंकुर निकलता है उसी तरह जिसका हृदय विशुद्ध है उसका थोड़ा किया हुआ सत्कार्य भी भारी रुप ग्रहण कर लेता है।

मनुष्य मानवता रख कर ही मनुष्य है। मानवता में सभी धर्म, सिद्धान्त सुविचार , कर्तव्य, सुकार्य आ जाते हैं।

मानवों को अपने विकास के लिए निर्दोष प्रवृत्तियों का आश्रय लेना चाहिये, तभी आकाँक्षित प्रगति आसान हो सकती है।

संसार में धार्मिक और कामिक सभी क्रियाँए सद्‌भाव से ही सफल होती है।

साधु में साधुता तथा शान्ति, और श्रावक में श्रावकत्व और दृढ धर्म-परायणता होना आवश्यक है।

जो श्रावक अपने धर्म पर विश्वास नहीं रखता, कर्तव्य का पालन नहीं करता और आशा से ढोंगियों की ताक में रहता है; उसे उन पशुओं के समान समझना चाहिये जो मनुष्यता से हीन है।

शान्ति तथा द्रोह परस्पर विरोधी तत्व है। जहाँ शान्ति होगी, वहाँ द्रोह नहीं होगा; और जहाँ द्रोह होगा वहाँ शान्ति निवास नहीं करेगी। द्रोह का मुख्य कारण है अपनी, भूलों का सुधार नहीं करना। जो पुरुष सहिष्णुता पूर्वक भूलों का सुधार कर लेता है, उसको द्रोह स्पर्श तक नहीं कर सकता।

प्रत्येक व्यक्ति को द्रोह सर्वथा छोड़ देना चाहिये और अपने प्रत्येक व्यवहार-कार्य में शान्ति से काम लेना चाहिए।

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक व्यय चुकाये बिना भेजने की *अनुमति* प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

क्या आप जानते हैं?

कि आज के प्रचलित टूथपेस्टों में उपयोग में लाये जाने वाले फॉस्फेट और जिलेटिन का निर्माण मृत प्राणी की हड्डिओं से किया जाता है? कई लोगों को इस का पता नहीं है. मृत प्राणी की हड्डियों का इस्तेमाल जिस टूथपेस्ट या टूथ पाउडर में किया जाता हो, इसको उपयोग में लाना उचित नहीं है.

अमर टूथपेस्ट — टूथपाउडर में

किसी भी अभक्ष्य पदार्थ का इस्तेमाल नहीं होता. आयुर्वेदिक जड़ी बुट्टियों का इन में बहुत ही सावधानीभरा उपयोग किया जाता है

आयुर्वेदिक

अमर

टूथपेस्ट-टूथपाउडर

नये युग की हर्बल-लहर
जो दांतों को निरोगी, मज़बूत और
चमकता रखे.

अमर टूथपाउडर, एक्स्ट्रा स्ट्राँग के नियमित उपयोग से पायोरिया तक के दांत और मसूड़ों के विविध रोग मिट सकते हैं. और श्वास की दुर्गंध भी दूर होती है.

आदर्श दंत-रक्षक — रेग्युलर टूथपेस्ट. **रु. ७.५०**
आदर्श दंतरोग-निवारक — स्ट्राँग टूथपेस्ट. **रु. ८.५०**
पायोरिया के इलाज के लिए आदर्श — एक्स्ट्रा स्ट्राँग टूथपाउडर. **रु. ११.५०**

भारत का एकमात्र अहिंसक आयुर्वेदिक उत्पादन.

निर्माता: स्वामि औषधालय प्रा. लि., ४९७, एस.वी.पी. रोड, बम्बई-४०० ००४.
फैक्ट्री: ४६४, न्यू जी.आई.डी.सी., कतारगाम, सुरत-३९५ ००८.

सम्पादक : जे. के. संघवी, अ. भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स-थाने में मुद्रित ।